CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2024 with Solution PDF-Set 2/4/1

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक: 80**

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 14 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्न 8 में आंतरिक विकल्प दिया गया है; ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का उत्तर दीजिए।
(iii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iv) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1. प्रगति मैदान में बहुत से मेले लगते हैं, लेकिन विश्व पुस्तक मेला का अपना आनंद है। यह मेला नहीं, पुस्तकों के साथ जीने, उन्हें महसूस करने का उत्सव है। बीते तीन दशकों से, जब से सूचना प्रौद्योगिकी का प्रादुर्भाव हुआ है, मुद्रण तकनीक से जुड़े लोग इसी भय में जीते रहे हैं कि कहीं कंप्यूटर, टी.वी., सी.डी. की दुनिया छपे हुए अक्षरों को अपनी बहुरंगी चकाचौंध में उदरस्थ न कर ले। जैसे-जैसे चिंताएँ बढ़ी, पुस्तकों का बाजार भी बढ़ता गया। उसे बढ़ना ही था – आखिर साक्षरता दर बढ़ रही है, ज्ञान पर आधारित जीविकोपार्जन करने वालों की संख्या बढ़ रही है। पुस्तकें इंसान को वैचारिक और मानसिक दुविधाओं के प्रश्नों का विकल्प देती हैं।

असल में विश्व पुस्तक मेला सिर्फ किताब खरीदने-बेचने की जगह नहीं है। यह पुस्तक प्रेमियों की जरूरत को एक स्थान पर पूरा करने का केवल बाजार नहीं है क्योंकि केवल पुस्तक खरीदने के लिए तो दर्जनों वेबसाइट उपलब्ध हैं, जो घर बैठे किताबें पहुँचा देती हैं, बल्कि एक उत्सव है। दरअसल, पुस्तक भी इंसानी प्यार की तरह होती है, जिससे जब तक बात न करो, सामने न हो, स्पर्श न करो, अपनत्व का अहसास नहीं होता। फिर, तुलनात्मकता के लिए एक ही स्थान पर एक साथ इतने सजीव उत्पाद मिलना एक बेहतर प्रचार का विकल्प और मनोवृत्ति भी है। पुस्तक मेला एक त्योहार है, पाठकों, लेखकों, व्यापारियों, बच्चों का। हर दिन कई सौ पुस्तकों का लोकार्पण, बीस-पच्चीस गोष्ठी-विमर्श, दस-पंद्रह लेखकों से बातचीत के सत्र और बच्चों की गतिविधियाँ। ढेर सारे विचार, मतांतर एक ही छत के नीचे, पर सभी का एक ही लक्ष्य, ज्ञान को विस्तार मिले।

दिन चढ़ते ही लोग कंधे छीलती भीड़ में उचक-उचक कर लेखकों को पहचानने का प्रयास करते हैं। कहीं कविता पाठ चलता है, तो कहीं पर व्यंग्य और कहानी पेश करने का आयोजन। इस मेले की खासियत यह भी है कि दूर-दराज से आए और नए लेखक अपनी पांडुलिपियाँ लेकर प्रकाशकों को तलाशते दिखते हैं। विदेशी मंडप में भले ही अधिकांश पुस्तकें केवल प्रदर्शन के लिए होती हैं, लेकिन कुछ लोग इनसे प्रेरणा प्राप्त करते भी दिखाई देते हैं। बच्चों की नैसर्गिक रचनात्मक क्षमता को बढ़ावा देने के लिए बाल मंडप एक महत्त्वपूर्ण आकर्षण होता है। पुस्तक मेला में दिल और दिमाग, दोनों पुस्तक के साथ धड़कते-मचलते हैं, तभी तो यह मेला नहीं हैं, आनंदोत्सव है। पुस्तकों का वसंतोत्सव है, जो आश्वस्त करता है कि मुद्रित शब्दों की शक्ति, सहकार और सौंदर्य अब भी विद्यमान है। [10 अंक]

1(i). गद्यांश के आधार पर पुस्तकों का जीवन में महत्त्व है – [1 अंक]

(A) ज्ञान अर्जित करने के लिए

(B) रोजगार प्राप्त करने के लिए

(C) मनोरंजन प्राप्त करने के लिए

(D) वैचारिक और मानसिक भूख शांत करने के लिए

सही उत्तर: (D) वैचारिक और मानसिक भूख शांत करने के लिए

हल:

अवधारणा:

- अपठित गद्यांश के प्रश्न का उत्तर उसके कथ्य और प्रसंग के आधार पर चुनना चाहिए।
- सही विकल्प में लेखक के आशय की पूर्ण अभिव्यक्ति होनी चाहिए; पाठ से बाहर की बात नहीं जोड़नी चाहिए।

चरण 1: गद्यांश से निर्णायक आधार पहचानें गद्यांश कहता है कि पुस्तकें इंसान को वैचारिक और मानसिक दुविधाओं के प्रश्नों का विकल्प देती हैं। इससे स्पष्ट है कि पुस्तकें विचारों की आवश्यकता पूरी करती हैं तथा मन की उलझनों को सुलझाने में सहायता देती हैं।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें ज्ञान अर्जित करना (A) पुस्तकों का सामान्य लाभ है, पर यहाँ उनके मानसिक और वैचारिक महत्त्व पर विशेष बल है। रोजगार (B) का उल्लेख पाठकों की बढ़ती संख्या के प्रसंग में है। मनोरंजन (C) को इस महत्त्व का आधार नहीं बनाया गया है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (D) है — वैचारिक और मानसिक भूख शांत करने के लिए।

त्वरित सुझाव: पहले प्रश्न के मुख्य शब्द को गद्यांश के संबंधित वाक्य से मिलाएँ, फिर अधूरे या अतिरिक्त अर्थ वाले विकल्प हटाएँ।

1(ii). सूचना प्रौद्योगिकी से अभिप्राय है – [1 अंक]

(A) सूचनाओं को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाना।

(B) सूचनाओं के आदान-प्रदान में तकनीक का प्रयोग करना।

(C) सूचनाओं के आदान-प्रदान का विकास करना।

(D) सूचना क्षेत्र में संदेश, तस्वीर या विचार दूसरे स्थान पर पहुँचाना।

सही उत्तर: (B) सूचनाओं के आदान-प्रदान में तकनीक का प्रयोग करना।

हल:

अवधारणा:

- अपठित गद्यांश के प्रश्न का उत्तर उसके कथ्य और प्रसंग के आधार पर चुनना चाहिए।
- सही विकल्प में लेखक के आशय की पूर्ण अभिव्यक्ति होनी चाहिए; पाठ से बाहर की बात नहीं जोड़नी चाहिए।

चरण 1: गद्यांश से निर्णायक आधार पहचानें प्रौद्योगिकी का अर्थ तकनीक का उपयोग है। गद्यांश में कंप्यूटर, टी.वी. तथा सी.डी. के माध्यम से सूचना और सामग्री पहुँचने की चर्चा है। इसलिए सूचना प्रौद्योगिकी में सूचनाओं के आदान-प्रदान में तकनीक का प्रयोग आवश्यक तत्व है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें विकल्प (A) केवल सूचना पहुँचाने की क्रिया बताता है, तकनीक की अनिवार्यता नहीं। विकल्प (C) आदान-प्रदान के विकास की बात करता है, उसकी तकनीकी पद्धति की नहीं। विकल्प (D) संदेशों के प्रकार और स्थानांतरण बताता है, पर तकनीक के प्रयोग को स्पष्ट नहीं करता।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (B) है — सूचनाओं के आदान-प्रदान में तकनीक का प्रयोग करना।

त्वरित सुझाव: पहले प्रश्न के मुख्य शब्द को गद्यांश के संबंधित वाक्य से मिलाएँ, फिर अधूरे या अतिरिक्त अर्थ वाले विकल्प हटाएँ।

1(iii). सूचना प्रौद्योगिकी के प्रादुर्भाव से किस क्षेत्र के लोगों को अधिक चिंता होने लगी ? [1 अंक]

(A) छापे खाने से जुड़े लोगों को

(B) तकनीक जगत से जुड़े लोगों को

(C) आई.टी. जगत से जुड़े लोगों को

(D) हाथ का काम करने वाले लोगों को

सही उत्तर: (A) छापे खाने से जुड़े लोगों को

हल:

अवधारणा:

- अपठित गद्यांश के प्रश्न का उत्तर उसके कथ्य और प्रसंग के आधार पर चुनना चाहिए।
- सही विकल्प में लेखक के आशय की पूर्ण अभिव्यक्ति होनी चाहिए; पाठ से बाहर की बात नहीं जोड़नी चाहिए।

चरण 1: गद्यांश से निर्णायक आधार पहचानें गद्यांश में सीधे कहा गया है कि मुद्रण तकनीक से जुड़े लोग भय में जीते रहे। उन्हें आशंका थी कि कंप्यूटर, टी.वी. और सी.डी. की चकाचौंध छपे अक्षरों को उदरस्थ कर लेगी। अतः चिंता छपाई तथा छापेखाने से जुड़े लोगों को थी।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें तकनीक जगत (B) बहुत व्यापक क्षेत्र है और यहाँ चिंतित समूह नहीं बताया गया है। आई.टी. जगत (C) नई सूचना तकनीक का क्षेत्र है, जबकि भय मुद्रण वालों का है। हाथ का काम करने वाले (D) लोगों का इस प्रसंग में उल्लेख नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (A) है — छापे खाने से जुड़े लोगों को।

त्वरित सुझाव: पहले प्रश्न के मुख्य शब्द को गद्यांश के संबंधित वाक्य से मिलाएँ, फिर अधूरे या अतिरिक्त अर्थ वाले विकल्प हटाएँ।

1(iv). निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

(I) पुस्तक मेले में सितारों और चित्रकारों से मिलने का अवसर प्राप्त होता है।

(II) सैकड़ों पुस्तकों का लोकार्पण और लेखकों के साथ विचार-विमर्श करने का अवसर प्राप्त होता है।

(III) अलग-अलग मत के लोग एक छत के नीचे खड़े होकर चर्चा करते हैं।

(IV) पुस्तक मेले में घूमने-फिरने और मित्र बनाने का अवसर मिलता है।

गद्यांश के अनुसार कौन-सा/कौन-से कथन सही है/हैं ? [1 अंक]

(A) केवल कथन (I) सही है।

(B) केवल कथन (II) सही है।

(C) केवल कथन (II) और (III) सही हैं।

(D) केवल कथन (I) और (IV) सही हैं।

सही उत्तर: (C) केवल कथन (II) और (III) सही हैं।

हल:

अवधारणा:

- अपठित गद्यांश के प्रश्न का उत्तर उसके कथ्य और प्रसंग के आधार पर चुनना चाहिए।
- सही विकल्प में लेखक के आशय की पूर्ण अभिव्यक्ति होनी चाहिए; पाठ से बाहर की बात नहीं जोड़नी चाहिए।

चरण 1: गद्यांश से निर्णायक आधार पहचानें कथन (II) सही है क्योंकि गद्यांश सैकड़ों पुस्तकों के लोकार्पण और लेखकों से बातचीत के सत्रों का उल्लेख करता है। कथन (III) भी सही है क्योंकि अलग-अलग विचार और मतांतर एक छत के नीचे मिलते हैं तथा गोष्ठियों में विचार-विमर्श होता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें कथन (I) में सितारों और चित्रकारों का उल्लेख है, जिसका गद्यांश समर्थन नहीं करता। कथन (IV) में मित्र बनाने को उद्देश्य बताया गया है, जो पाठ में नहीं है। इसलिए (A) और (D) गलत हैं। (B) केवल (II) को चुनकर सही कथन (III) को छोड़ देता है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (C) है — केवल कथन (II) और (III) सही हैं।

त्वरित सुझाव: पहले प्रश्न के मुख्य शब्द को गद्यांश के संबंधित वाक्य से मिलाएँ, फिर अधूरे या अतिरिक्त अर्थ वाले विकल्प हटाएँ।

1(ix). गद्यांश में पुस्तक मेले को लेखक ने 'आनंदोत्सव' की संज्ञा दी है, क्योंकि – [1 अंक]

(A) असंख्य लोग यहाँ आकर आनंद प्राप्त करते हैं।

(B) असंख्य लेखक, विचारक, मंत्री और सितारे यहाँ मिलते हैं।

(C) यहाँ दिल और दिमाग दोनों लगते हैं।

(D) यहाँ दिल और दिमाग दोनों को खुराक मिलती हैं।

सही उत्तर: (D) यहाँ दिल और दिमाग दोनों को खुराक मिलती हैं।

हल:

अवधारणा:

- अपठित गद्यांश के प्रश्न का उत्तर उसके कथ्य और प्रसंग के आधार पर चुनना चाहिए।
- सही विकल्प में लेखक के आशय की पूर्ण अभिव्यक्ति होनी चाहिए; पाठ से बाहर की बात नहीं जोड़नी चाहिए।

चरण 1: गद्यांश से निर्णायक आधार पहचानें लेखक कहता है कि पुस्तक मेले में दिल और दिमाग दोनों पुस्तक के साथ धड़कते-मचलते हैं। यहाँ अपनत्व और पुस्तकों से प्रेम के साथ विचारों तथा ज्ञान का विस्तार भी होता है। इस प्रकार भावना और बुद्धि, दोनों को पोषण मिलता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें विकल्प (A) भीड़ के आनंद तक सीमित है, जबकि लेखक मानसिक और भावात्मक तृप्ति बताता है। विकल्प (B) में मंत्री और सितारे जोड़ दिए गए हैं, जो गद्यांश में नहीं हैं। विकल्प (C) केवल दिल-दिमाग लगने की बात करता है; (D) उनके पोषण और संतुष्टि का भाव अधिक पूर्ण रूप से व्यक्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (D) है — यहाँ दिल और दिमाग दोनों को खुराक मिलती है।

त्वरित सुझाव: पहले प्रश्न के मुख्य शब्द को गद्यांश के संबंधित वाक्य से मिलाएँ, फिर अधूरे या अतिरिक्त अर्थ वाले विकल्प हटाएँ।

1(v). पांडुलिपि कहते हैं – [1 अंक]

(A) हाथ से लिखित (हस्तलिखित) प्रति को

(B) पाण्डवों द्वारा लिखित प्रति को

(C) नई पुस्तक की प्रति को

(D) अप्रकाशित पुस्तक की प्रति को

सही उत्तर: (A) हाथ से लिखित (हस्तलिखित) प्रति को

हल:

अवधारणा:

- अपठित गद्यांश के प्रश्न का उत्तर उसके कथ्य और प्रसंग के आधार पर चुनना चाहिए।
- सही विकल्प में लेखक के आशय की पूर्ण अभिव्यक्ति होनी चाहिए; पाठ से बाहर की बात नहीं जोड़नी चाहिए।

चरण 1: गद्यांश से निर्णायक आधार पहचानें पांडुलिपि शब्द का मूल अर्थ हस्तलिखित प्रति है। गद्यांश में नए लेखक अपनी पांडुलिपियाँ लेकर प्रकाशकों को तलाशते दिखाई देते हैं। यह प्रसंग लेखक की तैयार रचना की प्रति की ओर संकेत करता है, जिसे प्रकाशन के लिए प्रस्तुत किया जाता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें विकल्प (B) में पाण्डवों से संबंध जोड़ना शब्द की गलत व्याख्या है। विकल्प (C) केवल नई पुस्तक की प्रति कहता है, हस्तलिखित स्वरूप नहीं। विकल्प (D) का अप्रकाशित होना प्रकाशन की स्थिति बताता है; हर अप्रकाशित प्रति हस्तलिखित हो, यह आवश्यक नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (A) है — हाथ से लिखित (हस्तलिखित) प्रति को।

त्वरित सुझाव: पहले प्रश्न के मुख्य शब्द को गद्यांश के संबंधित वाक्य से मिलाएँ, फिर अधूरे या अतिरिक्त अर्थ वाले विकल्प हटाएँ।

1(vi). पुस्तक मेले में इनमें से क्या नहीं होता ? [1 अंक]

(A) कविता पाठ

(B) कहानी वाचन

(C) नई पुस्तक का प्रचार

(D) पार्टी का प्रचार

सही उत्तर: (D) पार्टी का प्रचार

हल:

अवधारणा:

- अपठित गद्यांश के प्रश्न का उत्तर उसके कथ्य और प्रसंग के आधार पर चुनना चाहिए।
- सही विकल्प में लेखक के आशय की पूर्ण अभिव्यक्ति होनी चाहिए; पाठ से बाहर की बात नहीं जोड़नी चाहिए।

चरण 1: गद्यांश से निर्णायक आधार पहचानें गद्यांश में कहीं कविता पाठ और कहीं व्यंग्य तथा कहानी प्रस्तुत किए जाने की बात है। पुस्तकों का लोकार्पण, प्रकाशकों से संपर्क और नए लेखकों की उपस्थिति भी बताई गई है। ये गतिविधियाँ साहित्य और पुस्तकों के प्रसार से संबंधित हैं।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें इसलिए कविता पाठ (A) तथा कहानी वाचन (B) मेले में होते हैं। नई पुस्तक का प्रचार (C) लोकार्पण और पुस्तकों को एक साथ सामने रखने की गतिविधियों से स्पष्ट है। पार्टी के प्रचार (D) का पाठ में कोई उल्लेख नहीं है; प्रश्न में इसी अनुपस्थित गतिविधि को चुनना है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (D) है — पार्टी का प्रचार।

त्वरित सुझाव: पहले प्रश्न के मुख्य शब्द को गद्यांश के संबंधित वाक्य से मिलाएँ, फिर अधूरे या अतिरिक्त अर्थ वाले विकल्प हटाएँ।

1(vii). गद्यांश में आई "कंप्यूटर, टी.वी., सी.डी. की दुनिया छपे हुए अक्षरों को अपनी बहुरंगी चकाचौंध में उदरस्थ न कर ले।" – पंक्ति का आशय है – [1 अंक]

(A) पढ़ाई से लोगों की रुचि न हटा दे।

(B) पुस्तकों का महत्त्व कम न कर दे।

(C) मुद्रित पुस्तकों का महत्त्व समाप्त न कर दे।

(D) मुद्रित माध्यमों को समाप्त न कर दे।

सही उत्तर: (C) मुद्रित पुस्तकों का महत्त्व समाप्त न कर दे।

हल:

अवधारणा:

- अपठित गद्यांश के प्रश्न का उत्तर उसके कथ्य और प्रसंग के आधार पर चुनना चाहिए।
- सही विकल्प में लेखक के आशय की पूर्ण अभिव्यक्ति होनी चाहिए; पाठ से बाहर की बात नहीं जोड़नी चाहिए।

चरण 1: गद्यांश से निर्णायक आधार पहचानें उदरस्थ करने का शाब्दिक अर्थ निगल जाना है। यहाँ यह लाक्षणिक प्रयोग है। मुद्रण तकनीक से जुड़े लोगों का भय है कि नई इलेक्ट्रॉनिक दुनिया की चकाचौंध मुद्रित पुस्तकों की उपयोगिता और महत्त्व को पूरी तरह समाप्त कर देगी।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें विकल्प (A) पढ़ाई में रुचि हटने की बात करता है, जबकि प्रसंग मुद्रित पुस्तकों का है। विकल्प (B) केवल महत्त्व कम होने की बात कहता है, इसलिए उदरस्थ की तीव्रता नहीं व्यक्त करता। विकल्प (D) सभी मुद्रित माध्यमों के समाप्त होने का व्यापक अर्थ जोड़ता है; पाठ में मुख्य संदर्भ पुस्तकों का है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (C) है — मुद्रित पुस्तकों का महत्त्व समाप्त न कर दे।

त्वरित सुझाव: पहले प्रश्न के मुख्य शब्द को गद्यांश के संबंधित वाक्य से मिलाएँ, फिर अधूरे या अतिरिक्त अर्थ वाले विकल्प हटाएँ।

1(viii). मुद्रण तकनीक से संबंध है – [1 अंक]

(A) पत्रकार का

(B) लेखक का

(C) प्रकाशक का

(D) अर्थशास्त्री का

सही उत्तर: (C) प्रकाशक का

हल:

अवधारणा:

- अपठित गद्यांश के प्रश्न का उत्तर उसके कथ्य और प्रसंग के आधार पर चुनना चाहिए।
- सही विकल्प में लेखक के आशय की पूर्ण अभिव्यक्ति होनी चाहिए; पाठ से बाहर की बात नहीं जोड़नी चाहिए।

चरण 1: गद्यांश से निर्णायक आधार पहचानें गद्यांश में पुस्तकों की छपाई, बढ़ते पुस्तक बाजार तथा पांडुलिपियाँ लेकर प्रकाशकों को ढूँढ़ते लेखकों की चर्चा है। प्रकाशक पांडुलिपि को छपी पुस्तक के रूप में सामने लाने के कार्य से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा होता है। अतः यहाँ सबसे उपयुक्त व्यवसाय प्रकाशक है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें पत्रकार (A) का मुख्य कार्य समाचार जुटाना और लिखना है। लेखक (B) रचना करता है; उसकी रचना छप सकती है, पर मुद्रण और प्रकाशन का प्रत्यक्ष कार्य प्रकाशक से संबंधित है। अर्थशास्त्री (D) का अध्ययन अर्थव्यवस्था है, मुद्रण तकनीक नहीं। इसलिए अन्य विकल्प अपेक्षाकृत असंगत हैं।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (C) है — प्रकाशक का।

त्वरित सुझाव: पहले प्रश्न के मुख्य शब्द को गद्यांश के संबंधित वाक्य से मिलाएँ, फिर अधूरे या अतिरिक्त अर्थ वाले विकल्प हटाएँ।

1(x). निम्नलिखित कथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प चुनकर लिखिए :

कथन : विश्व पुस्तक मेला सिर्फ किताब खरीदने और बेचने की जगह नहीं है।

कारण : आज किताब खरीदने-बेचने के लिए दर्जनों वेबसाइट उपलब्ध हैं। [1 अंक]

(A) कथन सही है, कारण गलत है।

(B) कथन सही नहीं है, कारण सही है।

(C) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, लेकिन कारण उसकी सही व्याख्या नहीं करता।

(D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

सही उत्तर: (D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

हल:

अवधारणा:

- कथन की सत्यता और कारण की सत्यता अलग-अलग जाँची जाती है।
- दोनों सही होने पर यह देखना आवश्यक है कि कारण कथन की व्याख्या करता है या नहीं।

चरण 1: कथन की सत्यता गद्यांश स्पष्ट करता है कि विश्व पुस्तक मेला केवल खरीदने-बेचने का बाजार नहीं, बल्कि पुस्तकों के साथ जीने और ज्ञान का विस्तार करने का उत्सव है। इसलिए दिया गया कथन सही है।

चरण 2: कारण और उसका संबंध घर बैठे पुस्तकें मँगाने के लिए दर्जनों वेबसाइट उपलब्ध होने की बात भी गद्यांश में कही गई है। केवल खरीदारी ऑनलाइन हो सकती है, इसलिए मेले की सार्थकता उससे आगे के संवाद, अपनत्व और सामूहिक उत्सव में है। कारण इसी अंतर को स्पष्ट करता है और कथन की सही व्याख्या करता है।

चरण 3: विकल्पों की जाँच (A) कारण को गलत कहता है और (B) कथन को गलत मानता है, जबकि दोनों गद्यांश से प्रमाणित हैं।

(C) उनके व्याख्यात्मक संबंध को नकारता है, इसलिए वह भी उपयुक्त नहीं है।

चरण 4: निष्कर्ष कथन तथा कारण दोनों सही हैं और कारण कथन की सही व्याख्या करता है। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: गद्यांश के क्योंकि वाले वाक्य को पढ़ें; वही वेबसाइट और पुस्तक मेले के उद्देश्य का संबंध स्पष्ट करता है।

---

2. अकेलेपन से जो लोग दुखी हैं,
वृत्तियाँ उनकी
निश्चय ही, बहिर्मुखी हैं।
सृष्टि से बाँधने वाला तार
उनका टूट गया है;
असली आनन्द का आधार
छूट गया है।
उद्गम से छूटी हुई नदियों में ज्वार कहाँ ?
जड़-कटे पौधों में जीवन की धार कहाँ ?
तब भी, जड़-कटे पौधों के ही समान
रोते हैं ये उखड़े हुए लोग बेचारे;
जीना चाहते हैं भीड़-भम्भड़ के सहारे।
भीड़, मगर, टूटा हुआ तार
और तोड़ती है
कटे हुए पौधों की
जड़ नहीं जोड़ती है।
बाहरी तरंगों पर जितना ही फूलते हैं;
हम अपने को उतना ही और भूलते हैं।
जड़ जमाना चाहते हो
तो एकान्त में जाओ;
अगम-अज्ञात में अपनी सोरें फैलाओ।
अकेलापन है राह
अपने आपको पाने की;
जहाँ से तुम निकल चुके हो,
उस घर में वापस जाने की। [5 अंक]

2(i). वृत्तियाँ उनकी, निश्चय ही बहिर्मुखी हैं – पंक्ति के संदर्भ में 'वृत्ति' का अर्थ है – [1 अंक]

(A) व्यापार
(B) स्वभाव
(C) कर्त्तव्य
(D) वृत्तांत

सही उत्तर: (B) स्वभाव

हल:

अवधारणा:

- शब्द के अनेक अर्थों में से प्रसंगानुकूल अर्थ चुना जाता है।
- बहिर्मुखी विशेषण मानसिक प्रवृत्ति और स्वभाव का संकेत देता है।

चरण 1: शब्द का प्रसंग कवि अकेलेपन से दुखी लोगों की बहिर्मुखी वृत्तियों का उल्लेख करता है। यहाँ बात उनकी मानसिक प्रवृत्ति और बाहर की दुनिया पर निर्भर रहने वाले स्वभाव की है।

चरण 2: अन्य अर्थों की जाँच (A) व्यापार आजीविका का कार्य है, (C) कर्त्तव्य निभाए जाने वाले दायित्व को कहते हैं और (D) वृत्तांत किसी घटना का विवरण है। इनसे बहिर्मुखी होने का मानसिक अर्थ व्यक्त नहीं होता।

चरण 3: अर्थ की पुष्टि वृत्ति के अनेक अर्थ हो सकते हैं, लेकिन विशेषण बहिर्मुखी उसका आशय मनोवृत्ति तक सीमित करता है। इसलिए शब्द को अलग से नहीं, पूरी पंक्ति के साथ समझना चाहिए।

चरण 4: निष्कर्ष यहाँ वृत्ति का अर्थ स्वभाव है। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: वृत्ति के साथ प्रयुक्त बहिर्मुखी शब्द देखें; उससे व्यापार और वृत्तांत जैसे अर्थ तुरंत हट जाते हैं।

2(ii). 'उद्गम से छूटी हुई नदियों में ज्वार कहाँ ?' – पंक्ति से अभिप्राय है – [1 अंक]

(A) मूल से अलग होने पर नदियों में प्रवाह नहीं रहता।

(B) मूल से अलग होने पर नदियों का अस्तित्व समाप्त हो जाता है।

(C) उद्गम स्थल से अलग होने पर नदियों में सौंदर्य नहीं रहता।

(D) मूल से अलग होने पर जीवन का सौंदर्य नहीं रहता।

सही उत्तर: (D) मूल से अलग होने पर जीवन का सौंदर्य नहीं रहता।

हल:

अवधारणा:

- काव्य में नदी और उसका उद्गम मूल स्रोत तथा जीवन-प्रवाह के बिंब हैं।
- आसपास की पंक्तियों से बिंब का अर्थ स्पष्ट होता है।

चरण 1: बिंब का प्रसंग कवि उद्गम से अलग नदी और जड़ से कटे पौधे के बिंबों द्वारा अपने मूल से कटे मनुष्य की दशा व्यक्त करता है। प्रश्न पंक्ति के अभिप्राय का है, इसलिए केवल नदी के वास्तविक प्रवाह तक सीमित रहना पर्याप्त नहीं है।

चरण 2: मानवीय आशय कविता में असली आनंद का आधार छूटने तथा अपने आपको पाने की बात आती है। अपने मूल और आंतरिक स्वरूप से अलग होने पर जीवन का आनंद, जीवंतता और सौंदर्य खो जाता है। नदी में ज्वार न होना इसी मानव जीवन की नीरसता का प्रतीक है।

चरण 3: अन्य विकल्पों की जाँच (A) नदी के प्रवाह का शाब्दिक अर्थ बताता है, जबकि प्रश्न प्रतीकात्मक अभिप्राय पूछता है। (B) नदी के अस्तित्व समाप्त होने और (C) केवल नदी के सौंदर्य तक सीमित हैं। (D) इस बिंब को कविता के मानव जीवन संबंधी केंद्रीय भाव से जोड़ता है।

चरण 4: निष्कर्ष मूल से अलग होने पर जीवन का सौंदर्य नहीं रहता। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: अभिप्राय पूछे जाने पर नदी के शाब्दिक प्रवाह से आगे बढ़ें और बिंब को मनुष्य के आनंद तथा आत्मपहचान से जोड़ें।

2(iii). भीड़ का क्या स्वभाव है ? [1 अंक]

(A) लोगों की आलोचना करना

(B) पौधों को जड़ से काटना

(C) दुखी को और दुखी करना

(D) दूसरों का उपहास करना

सही उत्तर: (C) दुखी को और दुखी करना

हल:

अवधारणा:

- काव्य में भीड़ बाहरी सहारे पर निर्भरता का प्रतीक है।
- टूटा तार और कटे पौधे अपने मूल से अलग हुए मनुष्य के बिंब हैं।

चरण 1: पंक्तियों से प्रमाण कवि कहता है कि भीड़ टूटा हुआ तार और तोड़ती है तथा कटे हुए पौधों की जड़ नहीं जोड़ती। अर्थात वह मूल से कटे हुए दुखी व्यक्ति की समस्या का समाधान नहीं करती।

चरण 2: निहित अर्थ भीड़ का सहारा लेने से व्यक्ति अपने आप से और दूर होता है। उसकी आंतरिक रिक्तता दूर होने के बजाय बढ़ती है। इस संदर्भ में भीड़ दुखी व्यक्ति को और दुखी करने वाली है।

चरण 3: अन्य विकल्प (A) आलोचना और (D) उपहास का उल्लेख इन पंक्तियों में नहीं है। (B) पौधों को सचमुच काटने का अर्थ लेता है, जबकि पौधे यहाँ अपने मूल से कटे लोगों के लिए प्रयुक्त बिंब हैं।

चरण 4: निष्कर्ष भीड़ का स्वभाव दुखी को और दुखी करना है। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: और तोड़ती है तथा जड़ नहीं जोड़ती है पढ़ें; भीड़ का नकारात्मक प्रभाव इन्हीं शब्दों से स्पष्ट है।

2(iv). 'बाहरी तरंगों पर जितना ही फूलते हैं' – पंक्ति में 'बाहरी तरंग' से आशय है – [1 अंक]

(A) सांसारिक माया

(B) सागर की लहरें

(C) दूसरों का सहारा

(D) भौतिक साधन

सही उत्तर: (A) सांसारिक माया

हल:

अवधारणा:

- बाहरी तरंगें बाहरी दुनिया के मोह और आकर्षण का प्रतीक हैं।
- अपने को भूलने की बात इस प्रतीक को आत्मविस्मृति से जोड़ती है।

चरण 1: प्रसंग पहचानना बाहरी तरंगों पर फूलने के साथ कवि अपने आपको भूलने की बात कहता है। बाहर का आकर्षण मनुष्य को आंतरिक पहचान से दूर करता है। इसलिए बाहरी तरंगों का अर्थ केवल जल की लहरें नहीं है।

चरण 2: सही आशय यहाँ सांसारिक माया बाहरी जगत के मोह, आकर्षण और चकाचौंध का व्यापक संकेत है। इनके प्रभाव में व्यक्ति अपने वास्तविक स्वरूप को भूलकर बाहरी सहारों में सुख खोजता है।

चरण 3: विकल्पों की तुलना (B) सागर की लहरें पंक्ति का शाब्दिक अर्थ है, प्रतीकात्मक आशय नहीं। (C) दूसरों का सहारा तथा (D) भौतिक साधन इस व्यापक मोह के सीमित पक्ष हो सकते हैं, लेकिन पूरी अभिव्यक्ति का उपयुक्त अर्थ सांसारिक माया है।

चरण 4: निष्कर्ष बाहरी तरंग से आशय सांसारिक माया है। सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: बाहरी तरंग के बाद अपने को भूलते हैं पढ़ें; इससे शाब्दिक समुद्री अर्थ हटकर सांसारिक मोह का अर्थ उभरता है।

2(v). 'जड़ जमाना चाहते हो, तो एकान्त में जाओ' – इन पंक्तियों में 'जड़ जमाना' से अभिप्राय है – [1 अंक]

(A) अपने आप को पहचानना

(B) अपने पाँव जमाना

(C) अपना वर्चस्व स्थापित करना

(D) बस जाना

सही उत्तर: (A) अपने आप को पहचानना

हल:

अवधारणा:

- जड़ जमाना यहाँ अपने मूल स्वरूप से जुड़ने का प्रतीक है।
- एकांत और आत्मचिंतन से आत्मपहचान की राह खुलती है।

चरण 1: काव्यांश का संकेत कवि एकांत में जाने के बाद अगम-अज्ञात में अपनी जड़ें फैलाने को कहता है। आगे अकेलेपन को अपने आपको पाने की राह कहा गया है। इससे जड़ जमाने का अर्थ आत्मपहचान स्पष्ट होता है।

चरण 2: अर्थ की व्याख्या यहाँ जड़ मनुष्य के भीतर स्थित मूल आधार का प्रतीक है। एकांत में आत्मचिंतन करके व्यक्ति अपने वास्तविक स्वरूप से जुड़ता है और बाहरी भीड़ पर उसकी निर्भरता घटती है।

चरण 3: अन्य विकल्पों की जाँच (B) पाँव जमाना और (D) बस जाना बाहरी स्थिरता बताते हैं। (C) वर्चस्व स्थापित करना दूसरों पर प्रभुत्व का भाव देता है। कविता का उद्देश्य सामाजिक प्रभुत्व या स्थान पर बसना नहीं, स्वयं को पहचानना है।

चरण 4: निष्कर्ष जड़ जमाना से अभिप्राय अपने आप को पहचानना है। सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: अकेलापन है राह अपने आपको पाने की को आधार बनाकर जड़ जमाने का अर्थ आत्मपहचान निर्धारित करें।

3(i). रमेश को हिन्दी भाषा के शब्दों को समझने में कठिनाई का अनुभव होता है इसीलिए संचार के निम्नलिखित माध्यमों में से उसके लिए कौन-सा माध्यम उपयुक्त रहेगा ? [1 अंक]

(A) टी.वी.

(B) समाचार-पत्र

(C) रेडियो

(D) सिनेमा

सही उत्तर: (B) समाचार-पत्र

हल:

अवधारणा:

- मुद्रित माध्यम में पाठक पढ़ने की गति स्वयं नियंत्रित करता है।
- समाचार-पत्र को बार-बार पढ़कर कठिन शब्दों का अर्थ समझा जा सकता है।

चरण 1: समस्या पहचानना रमेश को हिंदी के शब्दों को समझने में कठिनाई होती है। उसके लिए ऐसा माध्यम उपयोगी है जिसे वह अपनी गति से पढ़ सके और कठिन शब्द आने पर रुककर उनका अर्थ समझ सके।

चरण 2: उपयुक्त माध्यम समाचार-पत्र में पाठक शब्दों तथा वाक्यों को दोबारा पढ़ सकता है। वह शब्दकोश या किसी जानकार की सहायता लेकर अर्थ स्पष्ट कर सकता है। मुद्रित सामग्री स्थिर रहती है, इसलिए उसे समझने का समय मिलता है।

चरण 3: अन्य विकल्पों की तुलना (A) टी.वी., (C) रेडियो और (D) सिनेमा में सामग्री सामान्यतः प्रसारण की गति से आगे बढ़ती है। रेडियो में तो दृश्य सहायता भी नहीं होती। शब्दों की समझ विकसित करने और उन्हें बार-बार पढ़ने की दृष्टि से समाचार-पत्र उपयुक्त है।

चरण 4: निष्कर्ष रमेश के लिए समाचार-पत्र उपयुक्त माध्यम रहेगा। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: कठिन शब्द आने पर रुकने और दोबारा पढ़ने की सुविधा देखें; इससे समाचार-पत्र का चयन स्पष्ट होगा।

3(ii). टी.वी. पर एंकर द्वारा रिपोर्टर से मिली जानकारी के आधार पर सूचनाएँ देना कहलाता है – [1 अंक]

(A) ब्रेकिंग न्यूज
(B) ड्राई एंकर
(C) लाइव
(D) एंकर पैकेज

सही उत्तर: (B) ड्राई एंकर

हल:

अवधारणा:

- ड्राई एंकर में एंकर प्राप्त सूचना के आधार पर समाचार प्रस्तुत करता है।
- लाइव में सीधा प्रसारण और पैकेज में तैयार रिपोर्ट का संयोजन होता है।

चरण 1: प्रस्तुति की पहचान प्रश्न में एंकर रिपोर्टर से प्राप्त जानकारी के आधार पर दर्शकों को सूचना देता है। यहाँ एंकर स्वयं समाचार पढ़ता है; रिपोर्टर की घटनास्थल से प्रत्यक्ष प्रस्तुति या संपादित दृश्य-पैकेज का उल्लेख नहीं है।

चरण 2: तकनीकी नाम इस प्रकार केवल एंकर द्वारा सूचनाएँ देने की प्रस्तुति ड्राई एंकर कहलाती है। इसमें उपलब्ध सूचना को एंकर अपने शब्दों में संप्रेषित करता है और समाचार का परिचय या विवरण देता है।

चरण 3: अन्य विकल्पों का अंतर (A) ब्रेकिंग न्यूज किसी ताजा महत्त्वपूर्ण खबर के तत्काल आने का संकेत है। (C) लाइव घटनास्थल से सीधा प्रसारण है। (D) एंकर पैकेज में एंकर की भूमिका के साथ तैयार रिपोर्ट का पैकेज होता है। प्रश्न में इनका वर्णन नहीं है।

चरण 4: निष्कर्ष यह प्रस्तुति ड्राई एंकर कहलाती है। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: केवल एंकर द्वारा रिपोर्टर से मिली सूचना देना पहचानें; प्रत्यक्ष रिपोर्टिंग या दृश्य-पैकेज न होने पर ड्राई एंकर चुनें।

3(iii). किसी भी क्षेत्र में हो रहे भ्रष्टाचार, अनियमितताओं और गड़बड़ियों को उजागर करने के लिए तैयार की गई रिपोर्ट कहलाएगी – [1 अंक]

(A) खोजी रिपोर्ट
(B) इन-डेप्थ रिपोर्ट
(C) विश्लेषणात्मक रिपोर्ट
(D) विवरणात्मक रिपोर्ट

सही उत्तर: (A) खोजी रिपोर्ट

हल:

अवधारणा:

- खोजी रिपोर्ट का उद्देश्य छिपे हुए भ्रष्टाचार, अनियमितताओं और गड़बड़ियों को प्रमाण सहित सार्वजनिक करना है।
- सही विकल्प के लिए प्रश्न के मुख्य संकेत को पहचानकर शेष विकल्पों की सीमा भी स्पष्ट करनी चाहिए।

चरण 1: प्रश्न के निर्णायक शब्द पहचानें यहाँ केवल किसी घटना की सामान्य सूचना नहीं माँगी गई है। प्रश्न में भ्रष्टाचार और गड़बड़ियों

को उजागर करने की बात है। ऐसे तथ्यों की खोज और पड़ताल करके तैयार रिपोर्ट खोजी रिपोर्ट कहलाती है।

चरण 2: अन्य विकल्पों से भेद करें इन-डेप्थ रिपोर्ट किसी विषय की गहराई से पड़ताल करती है; विश्लेषणात्मक रिपोर्ट उसके कारणों और प्रभावों की व्याख्या करती है। विवरणात्मक रिपोर्ट घटना का ब्यौरा प्रस्तुत करती है। इन नामों में छिपी अनियमितता उजागर करने का विशिष्ट उद्देश्य खोजी रिपोर्ट का है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (A) है: खोजी रिपोर्ट।

त्वरित सुझाव: रिपोर्ट के उद्देश्य में छिपे भ्रष्टाचार को उजागर करना दिखे तो खोजी पत्रकारिता पहचानें।

3(iv). उलटा पिरामिड शैली की लोकप्रियता के संदर्भ में कौन-सा/कौन-से कथन सही है/हैं, उचित विकल्प चुनकर लिखिए :

(I) समाचार लेखन की सबसे लोकप्रिय, उपयोगी और बुनियादी शैली है।

(II) इस शैली में सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य या सूचना पिरामिड के निचले हिस्से में होती है।

(III) लेखन और संपादन की सुविधा के कारण यह समाचार लेखन की मानक शैली है।

(IV) इस शैली का आरम्भ द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान हुआ। [1 अंक]

(A) केवल कथन (I) सही है।

(B) केवल कथन (IV) सही है।

(C) कथन (I) और (III) सही हैं।

(D) कथन (I) और (II) सही हैं।

सही उत्तर: (C) कथन (I) और (III) सही हैं।

हल:

अवधारणा:

- उलटा पिरामिड शैली में सबसे महत्त्वपूर्ण सूचना पहले और अपेक्षाकृत कम महत्त्वपूर्ण विवरण बाद में आते हैं।
- सही विकल्प के लिए प्रश्न के मुख्य संकेत को पहचानकर शेष विकल्पों की सीमा भी स्पष्ट करनी चाहिए।

चरण 1: कथनों की सत्यता जाँचें कथन (I) सही है क्योंकि यह समाचार लेखन की लोकप्रिय, उपयोगी और बुनियादी शैली है। कथन (II) गलत है क्योंकि सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य समाचार के आरंभ में होते हैं, निचले हिस्से में नहीं।

चरण 2: लेखन और संपादन की सुविधा समझें कथन (III) सही है। संपादक नीचे से कम महत्त्वपूर्ण अंश हटा सकता है और मुख्य सूचना सुरक्षित रहती है। कथन (IV) गलत है; इस शैली का संबंध अमेरिकी गृहयुद्ध के दौरान समाचार भेजने की परिस्थितियों से है। अतः केवल (I) चुनने वाला (A), केवल (IV) चुनने वाला (B) और (II) को सही मानने वाला (D) असंगत हैं।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (C) है: कथन (I) और (III) सही हैं।

त्वरित सुझाव: उलटा पिरामिड में सूचना का महत्त्व ऊपर से नीचे घटता है; इसी नियम से कथन जाँचें।

3(v). दृश्यों के साथ खबर लिखने की बुनियादी शर्त किस माध्यम में है ? [1 अंक]

(A) समाचार-पत्र

(B) टेलीविजन

(C) रेडियो

(D) इंटरनेट

सही उत्तर: (B) टेलीविजन

हल:

अवधारणा:

- टेलीविजन दृश्य और श्रव्य दोनों माध्यम है; इसकी खबर के शब्दों का उपलब्ध दृश्यों से मेल होना आवश्यक है।
- सही विकल्प के लिए प्रश्न के मुख्य संकेत को पहचानकर शेष विकल्पों की सीमा भी स्पष्ट करनी चाहिए।

चरण 1: माध्यम की मूल विशेषता पहचानें प्रश्न में खबर को दृश्यों के साथ लिखने की बुनियादी शर्त पूछी गई है। टेलीविजन पर दर्शक खबर सुनने के साथ संबंधित दृश्य भी देखता है। इसलिए बोले जाने वाले शब्द और पर्दे पर दिखने वाला दृश्य परस्पर संगत होने चाहिए।

चरण 2: अन्य माध्यमों से तुलना करें समाचार-पत्र मुख्यत: मुद्रित शब्दों का माध्यम है और रेडियो केवल श्रव्य माध्यम है। इंटरनेट पर पाठ, ध्वनि और दृश्य सभी मिल सकते हैं, लेकिन उसकी प्रत्येक खबर में दृश्य अनिवार्य नहीं है। टेलीविजन की समाचार प्रस्तुति में दृश्य के अनुरूप लेखन मूल आवश्यकता है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (B) है: टेलीविजन।

त्वरित सुझाव: दृश्य और बोले गए शब्दों के अनिवार्य मेल का संकेत टेलीविजन समाचार से जोड़ें।

---

4. उहाँ राम लछिमनहि निहारी। बोले बचन मनुज अनुसारी।।
अर्ध राति गइ कपि नहिं आयउ। राम उठाइ अनुज उर लायऊ।।
सकहु न दुखित देखि मोहि काऊ। बंधु सदा तव मृदुल सुभाऊ।।
मम हित लागि तजेहु पितु माता। सहेहु बिपिन हिम आतप बाता।।
सो अनुराग कहाँ अब भाई। उठहु न सुनि मम बच बिकलाई।। [5 अंक]

4(i). 'बोले बचन मनुज अनुसारी' का अभिप्राय है – [1 अंक]

(A) मनुष्य द्वारा बोले जाने योग्य वचन

(B) मनुष्य द्वारा अनुसरण करने योग्य वचन

(C) मानव की प्रकृति के अनुरूप वचन

(D) मानव सुलभ गुणों से युक्त वचन

सही उत्तर: (C) मानव की प्रकृति के अनुरूप वचन

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में राम का शोक सामान्य मनुष्य की स्वाभाविक संवेदना और भ्रातृ-स्नेह के रूप में व्यक्त हुआ है।
- सही विकल्प के लिए प्रश्न के मुख्य संकेत को पहचानकर शेष विकल्पों की सीमा भी स्पष्ट करनी चाहिए।

चरण 1: पंक्ति का प्रसंग समझें राम मूर्च्छित लक्ष्मण को देखकर व्याकुल हैं। वे उन्हें हृदय से लगाते हैं और उनके प्रेम तथा त्याग को याद करते हैं। इस प्रसंग में 'मनुज अनुसारी का अर्थ मनुष्य की प्रकृति के अनुरूप है।

चरण 2: विकल्पों के अर्थ अलग करें (A) केवल बोलने की योग्यता बताता है और (B) दूसरों द्वारा अनुसरण करने की योग्यता बताता है;

ये प्रसंग का आशय नहीं हैं। (D) मानव-सुलभ गुणों की सामान्य बात कहता है, जबकि पंक्ति विशेष रूप से राम के वचनों में मानव-प्रकृति के अनुरूप शोक को व्यक्त करती है। इसलिए (C) सबसे सटीक अर्थ है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (C) है: मानव की प्रकृति के अनुरूप वचन।

त्वरित सुझाव: भावार्थ चुनते समय शब्दों के सामान्य गुण नहीं, प्रसंग में प्रकट भाव और अर्थ देखें।

4(ii). 'सकहु न दुखित ..... मृदुल सुभाऊ' चौपाई के आधार पर लक्ष्मण के स्वभाव की विशेषताएँ हैं – [1 अंक]

(A) स्नेही, मृदुल, भ्रातृ-प्रेमी

(B) मृदुल, आज्ञाकारी, कोमलचित्त

(C) कोमल, स्नेही, आज्ञाकारी

(D) कोमल, उदार, सहनशील

सही उत्तर: (A) स्नेही, मृदुल, भ्रातृ-प्रेमी

हल:

अवधारणा:

- किसी पात्र के स्वभाव का निष्कर्ष उद्धृत पंक्ति में व्यक्त व्यवहार और संबंध के आधार पर निकालना चाहिए।
- सही विकल्प के लिए प्रश्न के मुख्य संकेत को पहचानकर शेष विकल्पों की सीमा भी स्पष्ट करनी चाहिए।

चरण 1: चौपाई से प्रमाण लें 'सकहु न दुखित देखि मोहि काऊ में राम कहते हैं कि लक्ष्मण उन्हें कभी दुखी नहीं देख सकते। इससे बड़े भाई के प्रति उनका स्नेह और भ्रातृ-प्रेम स्पष्ट है। 'बंधु सदा तव मृदुल सुभाऊ सीधे उनके मृदुल स्वभाव को बताता है।

चरण 2: विकल्पों को प्रमाण से मिलाएँ (A) में स्नेही, मृदुल और भ्रातृ-प्रेमी तीनों विशेषताएँ उद्धृत चौपाई से पुष्ट हैं। (B) और (C) में आज्ञाकारिता है, जिसका इस चौपाई में उल्लेख नहीं है। (D) में उदारता और सहनशीलता हैं; ये भी इन पंक्तियों के प्रत्यक्ष आशय को व्यक्त नहीं करतीं।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (A) है: स्नेही, मृदुल, भ्रातृ-प्रेमी।

त्वरित सुझाव: चरित्र की विशेषता उसी उद्धृत पंक्ति से सिद्ध करें; पूरे पाठ के दूसरे गुण यहाँ न जोड़ें।

4(iii). 'सो अनुराग कहाँ अब भाई' पंक्ति द्वारा राम लक्ष्मण के हृदय में विद्यमान किस भाव की ओर संकेत कर रहे हैं ? [1 अंक]

(A) बड़े भाई को कभी दुखी न देखने का भाव

(B) सबके प्रति हृदय में विद्यमान कोमलता का भाव

(C) बड़े भाई के प्रति कर्तव्यपालन का भाव

(D) बड़े भाई के प्रति त्याग युक्त प्रेम का भाव

सही उत्तर: (A) बड़े भाई को कभी दुखी न देखने का भाव

हल:

अवधारणा:

- राम का दुख सहन न कर पाना लक्ष्मण के गहरे भ्रातृ-प्रेम की प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति है।
- सही विकल्प के लिए प्रश्न के मुख्य संकेत को पहचानकर शेष विकल्पों की सीमा भी स्पष्ट करनी चाहिए।

चरण 1: संदर्भ की सीधी कड़ी पहचानें राम ने लक्ष्मण को याद दिलाया है कि वे उन्हें कभी दुखी नहीं देख सकते थे। 'सकहु न दुखित

देखि मोहि काऊ। इसी स्नेह का प्रत्यक्ष परिचय देता है। अब राम स्वयं दुखी होकर पुकार रहे हैं, फिर भी लक्ष्मण मूर्च्छा के कारण उत्तर नहीं दे रहे हैं।

चरण 2: राम की व्याकुल पुकार का आशय समझें 'सो अनुराग कहाँ अब भाई। कहकर राम उसी प्रेम को जगाना चाहते हैं जिसके कारण लक्ष्मण उनका दुख सहन नहीं कर पाते थे। (B) सबके प्रति सामान्य कोमलता बताता है। (C) केवल कर्तव्यपालन है और (D) त्याग का व्यापक भाव बताता है। इस पुकार का सबसे सीधा आशय (A) है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (A) है: बड़े भाई को कभी दुखी न देखने का भाव।

त्वरित सुझाव: राम को दुखी न देख पाने की संवेदना को लक्ष्मण के अगाध भ्रातृ-प्रेम से जोड़कर पढ़ें।

4(iv). लक्ष्मण के हृदय में राम के प्रति अगाध प्रेम को व्यक्त करने वाली पंक्ति है – [1 अंक]

(A) अर्ध राति गइ कपि नहिं आयउ। राम उठाइ .....

(B) सकहु न दुखित देखि मोहि काऊ। बंधु सदा .....

(C) मम हित लागि तजेहु पितु माता। सहेहु बिपिन .....

(D) सो अनुराग कहाँ अब भाई। उठहु न सुनि .....

सही उत्तर: (B) सकहु न दुखित देखि मोहि काऊ। बंधु सदा .....

हल:

अवधारणा:

- राम का दुख सहन न कर पाना लक्ष्मण के गहरे भ्रातृ-प्रेम की प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति है।
- सही विकल्प के लिए प्रश्न के मुख्य संकेत को पहचानकर शेष विकल्पों की सीमा भी स्पष्ट करनी चाहिए।

चरण 1: पंक्ति में प्रेम की संवेदना पहचानें 'सकहु न दुखित देखि मोहि काऊ। में लक्ष्मण का राम को कभी दुखी न देख पाना व्यक्त हुआ है। प्रिय भाई का दुख असह्य होना उनके हृदय में राम के प्रति अगाध प्रेम को सीधे प्रकट करता है। अगली पंक्ति उनके मृदुल स्वभाव को पुष्ट करती है।

चरण 2: विकल्पों का प्रमुख भाव अलग करें (A) हनुमान के न लौटने पर राम की चिंता और लक्ष्मण को हृदय से लगाने का प्रसंग है। (C) लक्ष्मण के त्याग तथा कष्ट-सहन का विवरण है। (D) राम की व्याकुल पुकार है। प्रश्न लक्ष्मण के हृदय की प्रेमपूर्ण संवेदना व्यक्त करने वाली पंक्ति पूछता है, जिसका सबसे सीधा कथन (B) में है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (B) है: सकहु न दुखित देखि मोहि काऊ। बंधु सदा .....।

त्वरित सुझाव: राम को दुखी न देख पाने की संवेदना को लक्ष्मण के अगाध भ्रातृ-प्रेम से जोड़कर पढ़ें।

4(v). काव्यांश का केंद्रीय भाव है – [1 अंक]

(A) लक्ष्मण के शोक में डूबे राम के विलाप का वर्णन करना

(B) दुख की स्थिति के प्रभाव का वर्णन करना

(C) राम के निर्मल और उदात्त चरित्र का वर्णन करना

(D) लक्ष्मण द्वारा राम के लिए किए गए त्याग का वर्णन करना

सही उत्तर: (A) लक्ष्मण के शोक में डूबे राम के विलाप का वर्णन करना

हल:

अवधारणा:

- केंद्रीय भाव पूरे काव्यांश को जोड़ने वाला मुख्य भाव होता है; किसी एक सहायक प्रसंग को उसका स्थान नहीं देना चाहिए।
- सही विकल्प के लिए प्रश्न के मुख्य संकेत को पहचानकर शेष विकल्पों की सीमा भी स्पष्ट करनी चाहिए।

चरण 1: पूरे प्रसंग का भाव देखें काव्यांश में राम मूर्च्छित लक्ष्मण को देखते हैं, उन्हें हृदय से लगाते हैं और व्याकुल होकर पुकारते हैं। वे उनके मृदुल स्वभाव और अपने लिए किए त्याग को याद करते हैं। इन स्मृतियों का केंद्र राम का शोक और करुण विलाप है।

चरण 2: मुख्य और सहायक भाव अलग करें (B) दुख के प्रभाव की सामान्य बात करता है। (C) राम के चरित्र का व्यापक मूल्यांकन है। (D) लक्ष्मण के त्याग का उल्लेख करता है, जो यहाँ राम के विलाप का सहायक प्रसंग है। (A) पूरे अंश की शोकपूर्ण स्थिति और राम की अभिव्यक्ति दोनों को समेटता है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (A) है: लक्ष्मण के शोक में डूबे राम के विलाप का वर्णन करना।

त्वरित सुझाव: केंद्रीय भाव चुनते समय आरंभ से अंत तक बार-बार उभरने वाली भावस्थिति को आधार बनाएँ।

---

5. क्या-क्या सामान बाँध लें, जिससे मुझे वहाँ किसी प्रकार की असुविधा न हो सके। ऐसी यात्रा में किसी को किसी के साथ जाने का अधिकार नहीं, यह आश्वासन भक्तिन के लिए कोई मूल्य नहीं रखता। वह मेरे न जाने की कल्पना से इतनी प्रसन्न नहीं होती, जितनी अपने साथ न जा सकने की संभावना से अपमानित। भला ऐसा अंधेर हो सकता है। जहाँ मालिक वहाँ नौकर – मालिक को ले जाकर बंद कर देने में इतना अन्याय नहीं; पर नौकर को अकेले मुक्त छोड़ देने में पहाड़ के बराबर अन्याय है। ऐसा अन्याय होने पर भक्तिन को बड़े लाट तक लड़ना पड़ेगा। किसी की माई यदि बड़े लाट तक नहीं लड़ी, तो नहीं लड़ी; पर भक्तिन का तो बिना लड़े काम ही नहीं चल सकता। [5 अंक]

5(i). 'ऐसी यात्रा में किसी को किसी के साथ जाने का अधिकार नहीं।' पंक्ति में प्रयुक्त 'ऐसी यात्रा' से क्या अभिप्राय है ? [1 अंक]

(A) तीर्थ यात्रा

(B) जेल यात्रा

(C) अंतिम यात्रा

(D) विदेश यात्रा

सही उत्तर: (B) जेल यात्रा

हल:

अवधारणा:

- प्रसंग में यात्रा के अर्थ का निर्णय आसपास के कथनों से किया जाता है।
- सही विकल्प चुनने के लिए सभी विकल्पों की तुलना प्रसंग के मुख्य संकेत से की जाती है।

चरण 1: प्रसंग के निर्णायक संकेत को समझें ले जाकर बंद कर देने तथा साथ जाने का अधिकार न होने की बातें जेल जाने की स्थिति को स्पष्ट करती हैं। भक्तिन भी इसी संभावित यात्रा के लिए सामान बाँधना चाहती है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें तीर्थ यात्रा में साथी पर ऐसा प्रतिबंध नहीं है। अंतिम यात्रा में सामान और बंद किए जाने का प्रसंग

संगत नहीं है। विदेश यात्रा का भी कोई संकेत नहीं है। अतः ये तीनों विकल्प प्रसंग से मेल नहीं खाते।

चरण 3: निष्कर्ष यहाँ ऐसी यात्रा का अभिप्राय जेल यात्रा है। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: यात्रा का अर्थ तय करने के लिए उसके बाद आए बंद कर देने जैसे प्रसंगसूचक शब्दों को पहचानें।

5(ii). भक्तिन किस बात को अपने लिए अपमान समझती थी ? [1 अंक]

(A) पाक कला में मीन-मेख निकालने को

(B) महादेवी जी की आज्ञा का पालन न करने को

(C) उनकी पसंद का खाना न बना सकने की बात को

(D) कठिन परिस्थितियों में महादेवी जी को अकेला छोड़ देने को

सही उत्तर: (D) कठिन परिस्थितियों में महादेवी जी को अकेला छोड़ देने को

हल:

अवधारणा:

- पात्र की भावना को उसी के व्यवहार और गद्यांश के स्पष्ट कथन से समझना चाहिए।
- सही विकल्प चुनने के लिए सभी विकल्पों की तुलना प्रसंग के मुख्य संकेत से की जाती है।

चरण 1: प्रसंग के निर्णायक संकेत को समझें गद्यांश कहता है कि भक्तिन अपने साथ न जा सकने की संभावना से अपमानित होती है। वह महादेवी जी की सेवा हर परिस्थिति में करना अपना दायित्व मानती है। जेल जैसी कठिन स्थिति में भी वह उनके साथ रहना चाहती है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें खाने की आलोचना, आज्ञा न मानना और पसंद का भोजन न बना पाना इस अंश के विषय नहीं हैं। इसलिए (A), (B) और (C) उसके अपमान के वास्तविक कारण को व्यक्त नहीं करते।

चरण 3: निष्कर्ष कठिन परिस्थितियों में महादेवी जी को अकेला छोड़ देना भक्तिन को अपना अपमान लगता था। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: किसी पात्र की भावना पूछे जाने पर उस भावना का नाम बताने वाले वाक्य से उसका कारण जोड़ें।

5(iii). गद्यांश के संदर्भ में 'अंधेर होना' का क्या अर्थ है ? [1 अंक]

(A) अंधकार होना

(B) बेईमानी होना

(C) अपमान होना

(D) अन्याय होना

सही उत्तर: (D) अन्याय होना

हल:

अवधारणा:

- मुहावरे का अर्थ शब्दों के शाब्दिक अर्थ से नहीं, उनके प्रयोग के संदर्भ से निर्धारित होता है।
- सही विकल्प चुनने के लिए सभी विकल्पों की तुलना प्रसंग के मुख्य संकेत से की जाती है।

चरण 1: प्रसंग के निर्णायक संकेत को समझें अंधेर कहने के तुरंत बाद मालिक को बंद करने और नौकर को अकेला छोड़ने को अन्याय बताया गया है। भक्तिन की दृष्टि में स्वामिनी से उसे अलग कर देना अनुचित व्यवहार है। यही अंधेर शब्द का आशय स्पष्ट करता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें यहाँ प्रकाश के अभाव की चर्चा नहीं है, इसलिए (A) गलत है। छल या धन संबंधी बेईमानी का

संकेत न होने से (B) गलत है। अपमान भक्तिन की अनुभूति है, लेकिन इस मुहावरे का प्रसंगगत अर्थ (C) नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष गद्यांश में अंधेर होना का अर्थ अन्याय होना है। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: मुहावरे के ठीक पहले और बाद के वाक्य देखें; कई बार लेखक स्वयं उसका आशय स्पष्ट कर देता है।

5(iv). 'क्या-क्या ..... असुविधा न हो सके।' – इस वाक्य से महादेवी जी के प्रति भक्तिन की किस भावना का पता चलता है ? [1 अंक]

(A) निष्ठा और कर्तव्यपरायणता

(B) दृढ़ता और धर्मपरायणता

(C) आत्मीयता और भावुकता

(D) सेवा और तत्परता

सही उत्तर: (D) सेवा और तत्परता

हल:

अवधारणा:

- किसी विशेष वाक्य से व्यक्त भावना चुनते समय उसी वाक्य की क्रिया और उद्देश्य पर ध्यान दें।
- सही विकल्प चुनने के लिए सभी विकल्पों की तुलना प्रसंग के मुख्य संकेत से की जाती है।

चरण 1: प्रसंग के निर्णायक संकेत को समझें भक्तिन सामान बाँधने की चिंता इसलिए करती है कि महादेवी जी को वहाँ किसी प्रकार की असुविधा न हो। आवश्यकता का पहले से ध्यान रखना उसकी सेवा करने की इच्छा और काम के लिए तत्पर रहने का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें निष्ठा और कर्तव्यपरायणता उसके व्यापक गुण हैं, पर इस वाक्य का तात्कालिक केंद्र सेवा की तैयारी है। धर्मपरायणता का कोई संकेत नहीं है। केवल आत्मीयता और भावुकता कहने से सुविधा जुटाने की सक्रियता स्पष्ट नहीं होती।

चरण 3: निष्कर्ष इस वाक्य से भक्तिन की सेवा और तत्परता की भावना प्रकट होती है। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: निकट अर्थ वाले विकल्पों में वह विकल्प चुनें जो उद्धृत वाक्य की वास्तविक गतिविधि को सबसे सीधे व्यक्त करे।

5(v). भक्तिन बड़े लाट साहब से भी लड़ने को क्यों तैयार है ? [1 अंक]

(A) महादेवी जी को जेल भेजने का आदेश देने के कारण

(B) छोटे-छोटे लड़को को जेल में डालने के कारण

(C) स्वतंत्रता सेनानियों को जेल में डालने के कारण

(D) महादेवी जी को जेल में डालने और उसे मुक्त छोड़ने के कारण

सही उत्तर: (D) महादेवी जी को जेल में डालने और उसे मुक्त छोड़ने के कारण

हल:

अवधारणा:

- पात्र के संघर्ष का कारण पहचानने के लिए गद्यांश में बताए गए अन्याय का स्वरूप स्पष्ट करना आवश्यक है।
- सही विकल्प चुनने के लिए सभी विकल्पों की तुलना प्रसंग के मुख्य संकेत से की जाती है।

चरण 1: प्रसंग के निर्णायक संकेत को समझें भक्तिन मानती है कि जहाँ मालिक हो, वहीं नौकर को भी रहना चाहिए। महादेवी जी को जेल में बंद करके उसे अकेले मुक्त छोड़ना उसके लिए पहाड़ के बराबर अन्याय है। इस अलगाव को रोकने के लिए वह बड़े लाट तक

लड़ना चाहती है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें केवल महादेवी जी को जेल भेजने का आदेश बताने वाला (A) अधूरा है; भक्तिन की शिकायत साथ न रहने देने से है। छोटे लड़कों अथवा स्वतंत्रता सेनानियों को जेल में डालना इस अंश में उसकी लड़ाई का कारण नहीं बताया गया है।

चरण 3: निष्कर्ष महादेवी जी को जेल में डालने और उसे मुक्त छोड़ने के कारण भक्तिन बड़े लाट से भी लड़ने को तैयार है। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: कारण वाले विकल्प में देखें कि पात्र किस विशेष परिस्थिति को अन्याय कह रहा है, केवल सामान्य घटना न चुनें।

6(i). यशोधर बाबू बच्चों की तरक्की की खुशी को भी 'समहाउ इंप्रापर' क्यों अनुभव करते थे ? [1 अंक]

(A) बच्चों ने उन्हें आदर देना बंद कर दिया था।

(B) इससे अपनों में परायापन पैदा हो गया था।

(C) इससे बच्चों में स्वच्छंदता बढ़ गई थी।

(D) इससे बच्चों की जीवन-शैली आधुनिक हो गई थी।

सही उत्तर: (B) इससे अपनों में परायापन पैदा हो गया था।

हल:

अवधारणा:

- कहानी में यशोधर बाबू की असहजता पुरानी जीवन-दृष्टि और परिवार की बदलती प्राथमिकताओं के अंतर से जुड़ी है।
- सही विकल्प चुनने के लिए सभी विकल्पों की तुलना प्रसंग के मुख्य संकेत से की जाती है।

चरण 1: प्रसंग के निर्णायक संकेत को समझें बच्चों की तरक्की से परिवार की आर्थिक और सामाजिक स्थिति बदलती है, किंतु इस बदलाव के साथ यशोधर बाबू को अपने ही घर में दूरी अनुभव होती है। उनकी सोच और बच्चों की जीवन-दृष्टि का मेल घटने से खुशी में भी अपनापन नहीं रह जाता।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें कहानी का आशय बच्चों द्वारा आदर पूरी तरह बंद कर देना नहीं है, इसलिए (A) अतिशयोक्ति है। बढ़ती स्वच्छंदता या आधुनिक जीवन-शैली बाहरी पक्ष हैं; (C) और (D) उनके भीतरी परायापन को सीधे नहीं बताते।

चरण 3: निष्कर्ष यशोधर बाबू को लगता था कि तरक्की के कारण अपनों में परायापन पैदा हो गया है। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: परिवार की उपलब्धि पर पात्र की असहजता समझने के लिए उसके संबंधों में आए भावनात्मक बदलाव को देखें।

6(ii). यशोधर बाबू की पत्नी आधुनिकाओं-सा आचरण क्यों करने लगी थी ? [1 अंक]

(A) मन में दबी इच्छाओं के कारण

(B) पारिवारिक खुशी के कारण

(C) मातृसुलभ मज़बूरी के कारण

(D) सुविधाजनक होने के कारण

सही उत्तर: (C) मातृसुलभ मज़बूरी के कारण

हल:

अवधारणा:

- पात्र के आचरण का कारण उसकी पारिवारिक भूमिका और कथा में दिए गए संबंधों के आधार पर समझना चाहिए।
- सही विकल्प चुनने के लिए सभी विकल्पों की तुलना प्रसंग के मुख्य संकेत से की जाती है।

चरण 1: प्रसंग के निर्णायक संकेत को समझें यशोधर बाबू की पत्नी बच्चों के साथ सामंजस्य बनाकर चलती है। माँ होने के कारण वह उनकी इच्छाओं, तौर-तरीकों और नए जीवन के अनुरूप अपने व्यवहार को ढालती है। इसलिए उसका आधुनिकाओं जैसा आचरण मातृसुलभ मजबूरी से जुड़ा है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें मन में दबी इच्छाओं को इसका निर्णायक कारण नहीं बनाया गया है, इसलिए (A) उचित नहीं है। पारिवारिक खुशी (B) एक सामान्य परिणाम हो सकती है। केवल सुविधाजनक होने का तर्क (D) उसके मातृत्व और बच्चों से जुड़ाव को स्पष्ट नहीं करता।

चरण 3: निष्कर्ष वह मातृसुलभ मजबूरी के कारण आधुनिकाओं जैसा आचरण करने लगी थी। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: पात्र की भूमिका माँ हो तो बच्चों के साथ तालमेल की आवश्यकता को उसके व्यवहार के कारण से जोड़कर देखें।

6(iii). यशोधर बाबू ने डी.डी.ए. का फ़्लैट क्यों बुक नहीं किया था ? [1 अंक]

(A) रिटायरमेंट के बाद गाँव में जाकर बसना चाहते थे।

(B) लड़कों में से किसी एक लड़के के सरकारी नौकरी में आने का विश्वास था।

(C) फ़्लैट बुक कराने के लिए पैसे नहीं थे।

(D) योजनाबद्ध तरीके से काम नहीं करते थे।

सही उत्तर: (B) लड़कों में से किसी एक लड़के के सरकारी नौकरी में आने का विश्वास था।

हल:

अवधारणा:

- कथा में किसी निर्णय का कारण पात्र की व्यक्त मान्यता से निर्धारित होता है, पाठक की सामान्य अटकल से नहीं।
- सही विकल्प चुनने के लिए सभी विकल्पों की तुलना प्रसंग के मुख्य संकेत से की जाती है।

चरण 1: प्रसंग के निर्णायक संकेत को समझें यशोधर बाबू को भरोसा था कि उनके बेटों में से कोई न कोई सरकारी नौकरी में आ जाएगा। तब सरकारी आवास की सुविधा मिल सकेगी। इसी विश्वास के कारण उन्होंने अपने परिवार के लिए डी.डी.ए. का फ्लैट बुक कराने को आवश्यक नहीं समझा।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें रिटायरमेंट के बाद गाँव बसना (A) इस निर्णय का कारण नहीं है। पैसे का अभाव (C) भी कथित कारण नहीं है। योजनाबद्ध काम न करना (D) एक सामान्य मूल्यांकन है; प्रश्न विशेष निर्णय के पीछे का स्पष्ट विश्वास पूछता है।

चरण 3: निष्कर्ष उन्हें विश्वास था कि लड़कों में से कोई एक सरकारी नौकरी में आ जाएगा। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: निर्णय का कारण पूछे जाने पर कहानी में पात्र के बताए विश्वास को चुनें, उसके स्वभाव पर सामान्य टिप्पणी को नहीं।

6(iv). निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

(I) किशनदा ने यशोधर बाबू को नौकरी दिलवाई और जीवन में मार्गदर्शन किया।

(II) यशोधर बाबू का दैनिक खर्च नगण्य था इसलिए उनके बटुए में पैसे कम होते थे।

(III) दफ़्तर से लौटते हुए बिड़ला मंदिर जाना उन्होंने किशनदा से सीखा था।

(IV) यशोधर बाबू का मानना था काम तो सब अपने हाथ से ही ठीक रहता है।

'सिल्वर वैडिंग' कहानी के अनुसार उपर्युक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है/हैं ? [1 अंक]

(A) केवल कथन (I) सही है।

(B) केवल कथन (II) सही है।

(C) कथन (II) और (III) सही हैं।

(D) कथन (I), (II), (III) और (IV) सही हैं।

सही उत्तर: कथन (I) और (IV) सही हैं। यह संयोजन किसी विकल्प में नहीं है; अतः कोई मुद्रित विकल्प पूर्णतः सही नहीं है।

हल:

अवधारणा:

- कथनों की सत्यता को पात्रों के वास्तविक व्यवहार और कथा के प्रसंग से जाँचना चाहिए।
- सभी कथनों वाला विकल्प तभी सही होगा जब हर कथन स्वतंत्र रूप से सत्य हो।

चरण 1: कथन (I) और (IV) की जाँच किशनदा ने यशोधर बाबू को आश्रय देकर नौकरी दिलाई और दफ़्तरी जीवन में मार्गदर्शन किया था। इसलिए (I) सही है। घर में नौकर रखने की बात पर यशोधर बाबू स्वयं काम करने को ठीक मानते हैं; इसलिए (IV) भी सही है।

चरण 2: कथन (II), (III) और विकल्पों की जाँच कम दैनिक खर्च के बावजूद उनके बटुए में सौ-डेढ़ सौ रुपये रहते थे; अतः (II) गलत है। दफ़्तर से लौटते हुए मंदिर जाना उनकी नई रीति है, किशनदा से सीखी दिनचर्या नहीं; अतः (III) गलत है। (A) में सही (IV) छूटता है, (B) और (C) गलत (II) लेते हैं तथा (D) सभी को सही बताता है।

चरण 3: निष्कर्ष कथन (I) और (IV) सही हैं। यह संयोजन किसी विकल्प में नहीं है; अतः कोई मुद्रित विकल्प पूर्णतः सही नहीं है।

त्वरित सुझाव: हर कथन अलग जाँचें; सही कथनों का पूरा संयोजन न मिलने पर किसी अधूरे विकल्प को न चुनें।

6(ix). मुअनजो-दड़ो की खुदाई में मिले कोठार का उपयोग अनाज संग्रह के लिए किया जाता होगा। इस विश्वास का आधार है – [1 अंक]

(A) कोठार का वास्तुशिल्प

(B) संग्रहालय में मिले गेहूँ के दाने

(C) बैलगाड़ी के साक्ष्य

(D) पत्थर के औजार

सही उत्तर: (A) कोठार का वास्तुशिल्प

हल:

अवधारणा:

- पुरातात्त्विक भवन के संभावित उपयोग की पहचान उसकी बनावट और व्यवस्था से की जाती है।
- उपयोग का विशिष्ट आधार और सभ्यता का सामान्य प्रमाण अलग-अलग होते हैं।

चरण 1: निर्णायक आधार पहचानें कोठार की चौकियों और हवादारी की व्यवस्था अनाज सुरक्षित रखने के अनुकूल थी। इसी निर्माण रूप के कारण वहाँ अनाज जमा किए जाने का अनुमान लगाया गया है।

चरण 2: अन्य विकल्पों से भेद करें गेहूँ के दाने खेती का प्रमाण हैं; वे इस भवन के उपयोग का निर्णायक आधार नहीं हैं। बैलगाड़ी ढुलाई

से संबंधित है और पत्थर के औजार सामान्य जीवन से। इसलिए (B), (C) और (D) की अपेक्षा वास्तुशिल्प ही सीधे कोठार के काम को स्पष्ट करता है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (A) है : कोठार का वास्तुशिल्प।

त्वरित सुझाव: भवन के उपयोग वाला प्रश्न हो तो वस्तुओं की सूची की जगह उसकी विशेष बनावट पर ध्यान दें।

6(v). "अब तू ही बता, मैं का करूँ ?" – इस कथन से आनंदा की माँ के चरित्र की कौन-सी विशेषता प्रकट होती है ? [1 अंक]

(A) विवशता

(B) दुर्बलता

(C) अक्षमता

(D) परवशता

सही उत्तर: (A) विवशता

हल:

अवधारणा:

- संवाद का भाव उसके तत्काल प्रसंग से समझना चाहिए; विवशता परिस्थितियों के कारण उपाय न कर पाने की स्थिति है।
- समानार्थी लगने वाले विकल्पों में संवाद के भाव से सबसे सटीक शब्द चुनना चाहिए।

चरण 1: माँ की स्थिति समझें आनंदा पढ़ना चाहता है, पर पिता पढ़ाई की बात पर गुस्सा करते हैं। माँ बेटे की इच्छा समझते हुए भी पति के विरोध के सामने सीधे कोई रास्ता नहीं निकाल पा रही है। उसका प्रश्न इसी मजबूरी को व्यक्त करता है।

चरण 2: निकटवर्ती अर्थों का अंतर करें यह कथन माँ की सामान्य दुर्बलता या अक्षमता घोषित नहीं करता, इसलिए (B) और (C) ठीक नहीं हैं। (D) परवशता दूसरे के अधीन होने पर बल देता है; यहाँ विशेष परिस्थिति में कुछ न कर पाने की विवशता अधिक सटीक है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (A) है : विवशता।

त्वरित सुझाव: संवाद में व्यक्त तात्कालिक मजबूरी को व्यक्ति की स्थायी अक्षमता न मानें; प्रसंग से शब्द चुनें।

6(vi). आनंदा के पिता ने उसे पाठशाला भेजने के लिए कौन-सी शर्त नहीं रखी ? [1 अंक]

(A) सुबह खेतों में पानी लगाना

(B) स्कूल से आकर ढोर चराना

(C) सुबह शाम गाय-भैंस दुहना

(D) अधिक काम होने पर स्कूल से छुट्टी लेना

सही उत्तर: (C) सुबह शाम गाय-भैंस दुहना

हल:

अवधारणा:

- नकारात्मक प्रश्न में वह काम चुनना है जो पिता की बताई शर्तों में शामिल नहीं था।
- एक ही पशु से जुड़े अलग कार्यों को एक शर्त नहीं माना जा सकता।

चरण 1: दी गई शर्तें याद करें पिता ने पाठशाला जाने से पहले खेतों में पानी लगाने, छुट्टी के बाद ढोर चराने और खेत में अधिक काम होने पर पाठशाला से गैरहाज़िर रहने की शर्त रखी थी। वे पढ़ाई के साथ खेती का श्रम जारी रखना चाहते थे।

चरण 2: न रखी गई शर्त पहचानें सुबह-शाम गाय-भैंस दुहने की शर्त इस सूची में नहीं आती। (A), (B) और (D) पाठ में दी गई वास्तविक शर्तें हैं; प्रश्न में नहीं पूछे जाने के कारण उन्हें उत्तर नहीं चुनना चाहिए। पशु चराना और दूध दुहना अलग काम हैं।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (C) है : सुबह शाम गाय-भैंस दुहना।

त्वरित सुझाव: पहले प्रश्न का नहीं रेखांकित करें, फिर पाठ में मौजूद तीन शर्तें हटाकर बचा विकल्प चुनें।

6(vii). 'उस चक्की की अपेक्षा मास्टर की छड़ी की मार अच्छी लगती थी।' – इस वाक्य में किस चक्की की ओर संकेत किया गया है ? [1 अंक]

(A) खेती के काम की चक्की

(B) आटा पीसने की चक्की

(C) घर के काम की चक्की

(D) कोल्हू से रस निकालने की चक्की

सही उत्तर: (A) खेती के काम की चक्की

हल:

अवधारणा:

- रूपक में प्रयुक्त वस्तु का अर्थ प्रसंग से निकलता है; यहाँ चक्की लगातार थका देने वाले श्रम का बिंब है।
- उपमा या रूपक का आशय उसके शाब्दिक अर्थ से अलग हो सकता है।

चरण 1: चक्की का संदर्भ समझें आनंदा को खेतों में गरमी, सरदी, वर्षा और भूख-प्यास सहकर काम करना पड़ता था। पाठशाला खुलने पर दिन के समय इस निरंतर श्रम से छुटकारा मिला। इसलिए खेती का काम उसे पीसने वाली चक्की जैसा लगता था।

चरण 2: अन्य अर्थ हटाएँ यहाँ वास्तविक आटा पीसने वाली चक्की का उल्लेख नहीं है, इसलिए (B) गलत है। सामान्य घरेलू काम (C) और रस निकालने का कोल्हू (D) भी इस वाक्य के संदर्भ नहीं हैं। तुलना खेती के कठिन श्रम और विद्यालय के दंड के बीच है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (A) है : खेती के काम की चक्की।

त्वरित सुझाव: रूपक के अर्थ के लिए उससे पहले वर्णित काम देखें; केवल चक्की का शाब्दिक अर्थ न चुनें।

6(viii). 'अतीत में दबे पाँव' पाठ के संदर्भ में निम्नलिखित कथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प चुनकर लिखिए :
कथन : देखना अपनी आँख से देखना है। बाकी सब आँख का झपकना है।
कारण : यथार्थ का अनुभव स्वयं किया जा सकता है, कहना-सुनना केवल दिखावा मात्र है। [1 अंक]

(A) कथन सही है, कारण गलत है।

(B) कथन सही नहीं है, कारण सही है।

(C) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, किंतु कारण कथन की सही व्याख्या नहीं करता।

(D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

सही उत्तर: (D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

हल:

अवधारणा:

- कथन-कारण में दोनों की सत्यता के बाद उनके व्याख्यात्मक संबंध की जाँच की जाती है।
- दोनों कथनों का सही होना और कारण का व्याख्या करना अलग जाँच हैं।

चरण 1: कथन का मूल्यांकन कथन प्रत्यक्ष अनुभव की प्रामाणिकता बताता है। किसी स्थान को स्वयं देखना उसके बारे में पढ़ने-सुनने से अधिक सजीव अनुभव देता है; इसलिए कथन सही है।

चरण 2: कारण का मूल्यांकन कारण में कहना-सुनना को प्रत्यक्ष अनुभूति के सामने दिखावा कहा गया है। इसे इसी तुलनात्मक अर्थ में समझना है : वह स्वयं देखने की अनुभूति का स्थान नहीं लेता। इस संदर्भ में कारण भी सही है।

चरण 3: व्याख्या का संबंध जाँचें प्रत्यक्ष अनुभव की यही विशेषता बताती है कि अपनी आँख से देखना क्यों आवश्यक है। इसलिए कारण कथन की व्याख्या करता है। (A) और (B) सत्यता गलत बताते हैं तथा (C) दोनों के स्पष्ट संबंध को नकारता है।

चरण 4: निष्कर्ष सही विकल्प (D) है : कथन तथा कारण दोनों सही हैं और कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

त्वरित सुझाव: कारण के दिखावा शब्द को प्रत्यक्ष अनुभव से तुलना में पढ़ें और देखें कि वह कथन का आधार कैसे बनता है।

6(x). 'अतीत में दबे पाँव' पाठ से उद्धृत 'रेगिस्तान के जहाज से हवा के जहाज का यह ऐतिहासिक गठजोड़ है।' – कथन का अभिप्राय है – [1 अंक]

(A) ऊँटगाड़े में जहाज के उतारू पहियों का प्रयोग

(B) राजस्थान तक हवाई-यात्रा का प्रबंध

(C) ऊँटगाड़े का सड़कों पर हवा की तरह दौड़ना

(D) ऊँटगाड़े में हवा वाले पहियों का प्रयोग

सही उत्तर: (A) ऊँटगाड़े में जहाज के उतारू पहियों का प्रयोग

हल:

अवधारणा:

- अभिव्यक्ति का आशय समझने के लिए उसके पहले दिए गए ठोस उदाहरण की पहचान करनी चाहिए।
- जहाज शब्द यहाँ अलग साधनों के लिए प्रयुक्त है; गठजोड़ उनका व्यावहारिक मेल है।

चरण 1: दो जहाजों का संकेत समझें रेगिस्तान का जहाज ऊँट है और हवा का जहाज विमान। ऊँटगाड़े में विमान से उतारे गए पहिए लगाए गए हैं; इसी मेल को लेखक ने ऐतिहासिक गठजोड़ कहा है।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण (B) हवाई यात्रा और (C) तेज गति की बात करते हैं, जो यहाँ अभिप्रेत नहीं है। (D) केवल हवा वाले पहिए कहता है और विमान से उनका संबंध नहीं बताता। (A) पहियों के स्रोत और उनके नए उपयोग दोनों को स्पष्ट करता है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (A) है : ऊँटगाड़े में जहाज के उतारू पहियों का प्रयोग।

त्वरित सुझाव: दोनों जहाज किन साधनों के रूपक हैं, पहले यह पहचानें; फिर दोनों को जोड़ने वाली वस्तु खोजें।

7(क). निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

जीवन में सदाचार का महत्त्व [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में विषय के केंद्रीय विचार को अनुभव और दैनिक जीवन के उदाहरणों से स्पष्ट किया जाता है। सदाचार का अर्थ केवल नियम मानना नहीं, बल्कि अपने आचरण में सत्य, ईमानदारी, संयम और संवेदनशीलता अपनाना है।
- लेख का शीर्षक विषयानुकूल हो और विचार आरंभ, विस्तार तथा समापन के क्रम में जुड़ें। लगभग 120 शब्दों के लेख में विषय से

भटकने वाले प्रसंग और अनावश्यक दोहराव से बचना चाहिए।

चरण 1: विषय का केंद्रीय भाव निश्चित करें इस विषय का केंद्र अच्छे आचरण से बनने वाला व्यक्तित्व और सामाजिक विश्वास है। आरंभ में सदाचार का अर्थ स्पष्ट करें। मध्य में विद्यार्थी और सामान्य नागरिक के जीवन से छोटे उदाहरण लें। अंत में बताएं कि इसे प्रतिदिन के व्यवहार में उतारना क्यों आवश्यक है। इससे लेख केवल उपदेश न रहकर जीवन से जुड़ता है।

चरण 2: विचारों को क्रम दें सत्य बोलना, परिश्रम करना और दूसरों का सम्मान करना व्यक्तिगत गुण हैं; इन्हीं से सहयोग और भरोसा विकसित होता है। परीक्षा में ईमानदारी जैसे उदाहरण के बाद समाज पर उसका प्रभाव दिखाएं। सरल भाषा रखें और लेख को अनावश्यक नारों या लंबी सूचियों में न बदलें। निम्नलिखित नमूने में शीर्षक के बाद लगभग 120 शब्दों का लेख दिया गया है।

चरण 3: पूर्ण नमूना लेख लिखें **जीवन में सदाचार का महत्त्व**

सदाचार मनुष्य के व्यक्तित्व की सच्ची पहचान है। सत्य बोलना, ईमानदारी से काम करना और दूसरों का सम्मान करना इसके प्रमुख आधार हैं। धन और पद से मिली प्रतिष्ठा अस्थायी हो सकती है, किंतु अच्छे आचरण से अर्जित विश्वास लंबे समय तक बना रहता है। विद्यार्थी जीवन में सदाचार का अर्थ है परिश्रम से पढ़ना, परीक्षा में नकल न करना और साथियों की सहायता करना। छोटी भूल स्वीकार कर लेना भी नैतिक साहस है। जब प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्तव्य का पालन करता है, तब परिवार में आत्मीयता और समाज में सहयोग बढ़ता है। लालच और प्रतिस्पर्धा के इस समय में सदाचार हमें सही रास्ता दिखाता है। इसलिए इसे उपदेश तक सीमित न रखकर दैनिक व्यवहार का स्वाभाविक हिस्सा बनाना चाहिए।

चरण 4: निष्कर्ष सदाचार का महत्त्व उसके दैनिक अभ्यास में है; प्रस्तुत लेख व्यक्तिगत ईमानदारी से सामाजिक विश्वास तक इसी संबंध को स्पष्ट करता है।

त्वरित सुझाव: लेख में सदाचार की परिभाषा के साथ परीक्षा में ईमानदारी जैसा एक ठोस उदाहरण दें और अंत में उसके सामाजिक प्रभाव से विचार पूरा करें।

7(ख). निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

सौर ऊर्जा: ऊर्जा का अक्षय स्रोत [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- इस विषय के रचनात्मक लेख का केंद्र सूर्य से प्राप्त ऊर्जा की उपयोगिता और उसका अक्षय स्वरूप है। सूर्य के प्रकाश को सौर उपकरणों द्वारा उपयोगी ऊर्जा में बदला जाता है; इसका व्यावहारिक लाभ उदाहरणों से स्पष्ट करना चाहिए।
- लेख में शीर्षक, विषय का परिचय, उपयोग और संतुलित समापन होना चाहिए। लगभग 120 शब्दों में सौर ऊर्जा के लाभ के साथ उसकी व्यावहारिक चुनौतियों का संक्षिप्त उल्लेख विचार को विश्वसनीय बनाता है।

चरण 1: विषय और उदाहरण चुनें आरंभ में सूर्य को ऊर्जा का प्राकृतिक स्रोत बताएं। फिर सौर पैनल, सौर कुकर और सौर पंप जैसे परिचित उपयोग लें। कोयले और पेट्रोलियम की तुलना केवल संसाधनों की सीमितता समझाने के लिए करें। सौर ऊर्जा को प्रदूषण घटाने और ऊर्जा की उपलब्धता बढ़ाने से जोड़ें, लेकिन उसे हर परिस्थिति का तत्काल समाधान न बताएं।

चरण 2: संतुलित रूपरेखा बनाएं विचारों का क्रम स्रोत, उपयोग, लाभ, चुनौती और प्रयास रखें। आरंभिक लागत तथा रात में उत्पादन न होने जैसी सीमाओं को बहुत संक्षेप में लिखें। अंत में उचित तकनीक, भंडारण और जनभागीदारी की आवश्यकता बताएं। लेख का उद्देश्य विषय को सरल और प्रभावी भाषा में प्रस्तुत करना है; तकनीकी आंकड़ों की लंबी सूची देना आवश्यक नहीं है।

चरण 3: पूर्ण नमूना लेख लिखें **सौर ऊर्जा: ऊर्जा का अक्षय स्रोत**

हर सुबह उगता सूर्य हमारे लिए उजाले के साथ ऊर्जा की अपार संभावना भी लाता है। कोयले और पेट्रोलियम के भंडार सीमित हैं, जबकि सौर ऊर्जा बार-बार उपलब्ध होने वाला प्राकृतिक स्रोत है। सौर पैनल सूर्य के प्रकाश को बिजली में बदलते हैं। घरों की छतों, खेतों और सार्वजनिक भवनों पर उनका उपयोग बढ़ाया जा सकता है। सौर कुकर और सौर पंप भी दैनिक आवश्यकताएं पूरी करने में सहायक हैं। इनके उपयोग से जीवाश्म ईंधनों पर निर्भरता और प्रदूषण घट सकता है। हालांकि आरंभिक लागत, मौसम और रात के समय उत्पादन

का अभाव चुनौतियां हैं, पर बेहतर भंडारण और उचित सहायता इन्हें कम कर सकते हैं। सौर ऊर्जा अपनाना आने वाली पीढ़ियों के लिए स्वच्छ और सुरक्षित भविष्य की दिशा में सार्थक कदम है।

चरण 4: निष्कर्ष सौर ऊर्जा का योजनाबद्ध उपयोग ऊर्जा की जरूरतों और पर्यावरण की सुरक्षा को साथ लेकर चल सकता है; लेख इसी संभावना का संतुलित चित्र प्रस्तुत करता है।

त्वरित सुझाव: इस विषय में एक सौर उपकरण का उदाहरण, एक पर्यावरणीय लाभ और एक व्यावहारिक चुनौती जोड़ें; इससे लेख ठोस भी बनेगा और संतुलित भी।

7(ग). निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :
रेल की खिड़की से बाहर का दृश्य [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में दृश्य के वर्णन के साथ लेखक की अनुभूति और कल्पना का स्वाभाविक मेल होता है।
- रेल की खिड़की से दिखने वाला बदलता परिदृश्य गति, रंग, ध्वनि और मानवीय जीवन के बिंबों से सजीव बनता है।

चरण 1: प्रारूप और विषय का चयन दिए गए विषय पर एक उपयुक्त शीर्षक रखकर लगभग 120 शब्दों का रचनात्मक लेख लिखना है। लेख में कोई पत्रगत संबोधन या प्रेषक का पता नहीं आएगा। खिड़की पर बैठे यात्री की दृष्टि से वर्णन करने पर पूरे लेख में एकरूपता बनी रहती है।

चरण 2: विषयवस्तु की योजना दृश्य का आरंभ सुबह और चलती रेल से करें। फिर खेत, पेड़, नदी, गाँव और स्टेशन के बदलते चित्र प्रस्तुत करें। केवल वस्तुओं की सूची देने के बजाय उनके रंग, गति और ध्वनि का वर्णन करें। अंत में यात्रा से मिली अनुभूति जोड़ें, ताकि बाहर का दृश्य मन के अनुभव से जुड़ सके। लेख में घटनाओं का क्रम यात्रा के क्रम के अनुरूप रखें। प्रथम पुरुष की भाषा आत्मीयता पैदा करती है। दृश्य का कोई एक बिंब, जैसे नदी में चमकता आकाश, वर्णन को साधारण सूचना से आगे ले जाता है। शब्दसीमा बनाए रखने के लिए असंबद्ध प्रसंग और अनावश्यक विस्तार से बचें।

चरण 3: पूर्ण रचनात्मक लेख रेल की खिड़की से बाहर का दृश्य

सुबह की सुनहरी धूप रेल की खिड़की से भीतर उतर रही थी। बाहर हरे खेत दूर तक फैले थे। कहीं किसान हल चला रहे थे, कहीं बच्चे पगडंडी पर दौड़ते हुए रेल को हाथ हिला रहे थे। पास के पेड़ तेजी से पीछे भागते लगते, जबकि दूर की पहाड़ियाँ धीरे खिसकती दिखाई देती थीं। अचानक पुल आया। नीचे नदी का चमकता पानी मानो आकाश का टुकड़ा सँभाले बह रहा था। छोटे स्टेशन पर चाय की पुकार और यात्रियों की चहलपहल सुनाई दी। फिर गाँव पीछे छूट गया और खुले मैदान सामने आ गए। खिड़की अब केवल चौखटा नहीं थी; वह बदलते भारत की जीवंत तस्वीर थी। मन हुआ, यह यात्रा चलती रहे और प्रकृति अपनी अनकही कहानियाँ मुझे सुनाती रहे।

चरण 4: निष्कर्ष इस लेख में रेल की गति के साथ बदलते दृश्य और यात्री के मन की अनुभूति जुड़कर विषय को सजीव बनाते हैं।

त्वरित सुझाव: दृश्य लिखते समय पास और दूर की वस्तुओं की गति, रंग और ध्वनि जोड़ें तथा अंत में अपनी अनुभूति दें।

8(i)(a). मुद्रित माध्यमों में पढ़ी हुई कहानी की तुलना में दृश्य माध्यम पर देखी गई कहानी को लोग देर तक क्यों याद रखते हैं ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मुद्रित माध्यम में पाठक शब्दों के आधार पर दृश्य की कल्पना करता है; दृश्य माध्यम कहानी को चित्र और ध्वनि के साथ प्रस्तुत करता है।
- एक साथ देखने और सुनने से कथा के पात्र, घटनाएँ और भाव अधिक सजीव अनुभव बनते हैं।

चरण 1: दोनों माध्यमों की प्रस्तुति का अंतर मुद्रित कहानी मुख्यतः लिखित शब्दों से अर्थ पहुँचाती है। दृश्य माध्यम में पात्रों के चेहरे, हावभाव, परिवेश, संवाद, संगीत और घटनाओं की गति प्रत्यक्ष दिखाई या सुनाई देती है। इससे कहानी को समझने में दृश्य और श्रव्य, दोनों अनुभव साथ काम करते हैं।

चरण 2: संक्षिप्त उत्तर दृश्य माध्यम में कहानी चित्र, ध्वनि, संवाद, अभिनय और हावभाव के साथ प्रस्तुत होती है। दर्शक उसे देखने और सुनने के कारण अधिक सजीव रूप में अनुभव करता है। पात्रों और घटनाओं का यह संयुक्त प्रभाव स्मृति पर गहरी छाप छोड़ता है, इसलिए कहानी देर तक याद रहती है।

चरण 3: निष्कर्ष चित्र और ध्वनि का संयुक्त, सजीव प्रभाव दृश्य माध्यम की कहानी को अधिक समय तक स्मरणीय बनाता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में केवल चित्र का उल्लेख न करें; ध्वनि, अभिनय और उनके संयुक्त स्मृति प्रभाव को भी जोड़ें।

अथवा

8(i)(b). "कैमरे में बंद अपाहिज" कविता के आधार पर शारीरिक चुनौती झेलने वाले व्यक्ति और दूरदर्शन कर्मी के बीच हुए संवाद के दृश्य को लगभग 40 शब्दों में लिखिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रघुवीर सहाय की कविता में दूरदर्शन कर्मी की संवेदनहीन प्रश्नावली और पीड़ित व्यक्ति की असहजता का चित्रण है।
- दृश्य में करुणा के प्रदर्शन और वास्तविक मानवीय संवेदना के अंतर को पहचानना आवश्यक है।

चरण 1: प्रसंग और संवाद की पहचान दूरदर्शन कर्मी शारीरिक चुनौती झेल रहे व्यक्ति से उसकी पीड़ा के बारे में बार-बार प्रश्न पूछता है। वह उसकी स्थिति को समझने के बजाय उसे कैमरे पर भावुक करके कार्यक्रम को प्रभावशाली बनाना चाहता है। इसलिए दृश्य का वर्णन करते समय कर्मी का दबाव और व्यक्ति की असहजता, दोनों स्पष्ट होने चाहिए।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर दूरदर्शन कर्मी शारीरिक चुनौती झेल रहे व्यक्ति से बार-बार उसकी पीड़ा पूछता है और उसे रोने के लिए उकसाता है। व्यक्ति असहज और विवश है। कैमरा उसके दुख को उभारता है; कर्मी की संवेदना कार्यक्रम को रोचक बनाने का साधन बन जाती है।

चरण 3: निष्कर्ष यह संवाद पीड़ित की विवशता और दूरदर्शन कर्मी की संवेदनहीन, प्रदर्शनपरक कार्यशैली को उजागर करता है।

त्वरित सुझाव: दृश्य के उत्तर में प्रश्न पूछने वाले का दबाव और सामने बैठे व्यक्ति की असहजता, दोनों का संकेत दें।

8(ii)(a). रेडियो नाटक की कहानी पूरी तरह एक्शन (क्रिया) प्रधान क्यों नहीं होनी चाहिए ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रेडियो श्रव्य माध्यम है; श्रोता पात्रों, घटनाओं और परिवेश को देखकर नहीं, सुनकर समझता है।
- रेडियो नाटक में संवाद, ध्वनि प्रभाव, संगीत और मौन मिलकर दृश्य का आभास कराते हैं।

चरण 1: माध्यम की सीमा समझें मंच या चलचित्र में भागना, गिरना, मारपीट करना अथवा चेहरे के हावभाव सीधे दिखाए जा सकते हैं। रेडियो में केवल ऐसी क्रियाएँ रख देने से उनका पूरा अर्थ श्रोता तक नहीं पहुँचता। उसे यह समझने के लिए सुनाई देने वाले संकेत चाहिए कि कौन, कहाँ और क्यों कोई काम कर रहा है।

चरण 2: संवाद की भूमिका स्पष्ट करें रेडियो की कहानी में ऐसी स्थितियाँ और घटनाएँ चुननी चाहिए जिन्हें स्वाभाविक संवाद और उपयुक्त ध्वनियों से व्यक्त किया जा सके। पूरी तरह क्रिया प्रधान कहानी में बार-बार घटनाओं का वर्णन करवाना पड़ेगा। इससे संवाद

कृत्रिम और नाटक बोझिल हो सकता है। इसलिए क्रिया का होना उचित है, लेकिन कथानक केवल उसी पर निर्भर नहीं होना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष रेडियो में दृश्य दिखाई नहीं देते; इसलिए पूरी तरह क्रिया प्रधान कहानी समझना कठिन होगा। कहानी ऐसी हो कि संवाद और ध्वनि प्रभावों से घटनाएँ, वातावरण तथा पात्रों की मन:स्थिति स्पष्ट हों और श्रोता के मन में उनका चित्र बन सके।

त्वरित सुझाव: उत्तर में रेडियो की श्रव्य प्रकृति को संवाद और ध्वनि प्रभावों की आवश्यकता से जोड़ें।

अथवा

8(ii)(b). रटंत से क्या अभिप्राय है ? यह बुरी लत क्यों है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रटंत का अर्थ किसी सामग्री को बिना समझे यांत्रिक ढंग से याद करके दोहराना है।
- रचनात्मक अभिव्यक्ति के लिए स्वतंत्र चिंतन, अनुभव और अपने शब्दों में विचार रखना आवश्यक है।

चरण 1: रटंत का अर्थ बताएं किसी विषय का अर्थ, तर्क और संदर्भ समझे बिना शब्दों या तैयार उत्तरों को जस का तस याद करना रटंत कहलाता है। समझकर याद रखना इससे भिन्न है, क्योंकि समझ विकसित होने पर व्यक्ति बात को नए संदर्भ में भी अपने शब्दों में कह सकता है।

चरण 2: उसके दुष्परिणाम समझाएं रटंत की आदत व्यक्ति को तैयार उत्तरों पर निर्भर बना देती है। वह स्वयं सोचने, प्रश्न करने और अपने अनुभवों से नया विचार विकसित करने का अभ्यास नहीं करता। प्रश्न का रूप बदल जाए तो रटा हुआ उत्तर उपयोगी नहीं रहता। इस कारण मौलिकता, कल्पनाशीलता और आत्मविश्वास का विकास बाधित होता है; विशेषकर अप्रत्याशित विषय पर लिखते समय यह आदत कठिनाई पैदा करती है।

चरण 3: निष्कर्ष बिना समझे तैयार सामग्री को याद करके दोहराना रटंत है। यह बुरी लत है, क्योंकि इससे स्वतंत्र चिंतन, मौलिक अभिव्यक्ति और रचनात्मकता बाधित होते हैं तथा व्यक्ति नए विषय या बदली हुई परिस्थिति में अपने विचार व्यक्त नहीं कर पाता।

त्वरित सुझाव: रटंत की परिभाषा के बाद उसके दो प्रभाव लिखें: तैयार उत्तरों पर निर्भरता और मौलिकता में कमी।

9(क). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर लिखिए :
समाचार पत्र-पत्रिका के संदर्भ में लेख से क्या तात्पर्य है ? लेख लिखते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समाचार पत्र-पत्रिका का लेख किसी विषय पर तथ्य, विश्लेषण और विचार प्रस्तुत करने वाली गद्य रचना है।
- प्रभावी लेख में विषय की स्पष्टता, प्रामाणिक जानकारी, क्रमबद्ध विवेचन और पाठक के अनुकूल भाषा होती है।

चरण 1: प्रश्न की दोनों मांगें पहचानें प्रश्न पहले लेख का अर्थ पूछता है और फिर लेखन संबंधी सावधानियाँ। इसलिए केवल परिभाषा देना पर्याप्त नहीं होगा। समाचार पत्र-पत्रिका में लेख समसामयिक, सामाजिक, सांस्कृतिक या अन्य महत्त्वपूर्ण विषय की व्याख्या कर सकता है। वह पाठक को विषय समझने और उस पर विचार बनाने में सहायता देता है।

चरण 2: लेखन की आवश्यक बातें चुनें लेखक को विषय के बारे में पर्याप्त जानकारी एकत्र करनी चाहिए और तथ्यों की विश्वसनीयता जाँचनी चाहिए। विचारों को आरंभ, विवेचन और निष्कर्ष के क्रम में रखना उपयोगी है। शीर्षक विषय के अनुरूप हो तथा भाषा स्पष्ट, सहज और रोचक हो। अनावश्यक विस्तार, दोहराव और अप्रमाणित दावों से बचते हुए पाठक वर्ग तथा निर्धारित शब्द सीमा का ध्यान रखना चाहिए।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर समाचार पत्र-पत्रिका में प्रकाशित लेख किसी विषय का तथ्यपूर्ण, विश्लेषणात्मक और विचारपरक विवेचन होता है। लेख लिखते समय विषय की स्पष्ट समझ, प्रामाणिक तथ्यों, आकर्षक शीर्षक, क्रमबद्ध प्रस्तुति तथा सरल और प्रभावी भाषा का ध्यान रखना चाहिए। भूमिका, विषय-विस्तार और निष्कर्ष में संगति हो। पाठक वर्ग और शब्द सीमा का ध्यान रखते हुए अनावश्यक दोहराव तथा अप्रमाणित बातों से बचना चाहिए।

चरण 4: निष्कर्ष लेख विषय का विचारपूर्ण विवेचन है; उसकी प्रभावशीलता तथ्य, तर्क, भाषा और सुव्यवस्थित प्रस्तुति पर निर्भर करती है।

त्वरित सुझाव: परिभाषा के बाद तथ्य, क्रम, भाषा और पाठक वर्ग का उल्लेख करें; उत्तर को केवल शीर्षक तक सीमित न रखें।

9(ख). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर लिखिए :

पत्रकारीय लेखन का संबंध किससे है और यह साहित्यिक और सृजनात्मक लेखन से अलग कैसे है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पत्रकारीय लेखन का संबंध जनता को घटनाओं, समस्याओं और मुद्दों की तथ्यपूर्ण जानकारी देने से है।
- साहित्यिक और सृजनात्मक लेखन में कल्पना तथा कलात्मक अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता अधिक होती है; पत्रकारिता में तथ्य-जाँच और सार्वजनिक उत्तरदायित्व प्रमुख हैं।

चरण 1: पत्रकारीय लेखन का संबंध स्पष्ट करें पत्रकारीय लेखन समाचार माध्यमों के लिए किया जाता है। इसका सरोकार वास्तविक घटनाओं, जनजीवन, समस्याओं तथा सार्वजनिक महत्त्व के विषयों से होता है। इसमें पाठक, श्रोता या दर्शक को सही जानकारी देना आवश्यक है। इसलिए सूचना की सत्यता, स्रोत की विश्वसनीयता और तथ्यों के प्रति ईमानदारी इसके आधार हैं।

चरण 2: साहित्यिक लेखन से अंतर समझें साहित्य में लेखक कल्पित पात्र, घटनाएँ और प्रसंग रच सकता है तथा भाव, अनुभव और भाषा के कलात्मक सौंदर्य को प्रमुखता दे सकता है। पत्रकार भी रोचक शैली और रचनात्मक प्रस्तुति अपना सकता है, लेकिन वह वास्तविक घटना के तथ्य अपनी कल्पना से नहीं बदल सकता। उसका लेखन सामान्य पाठक के लिए स्पष्ट हो और सार्वजनिक सरोकारों के प्रति जिम्मेदार रहे।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर पत्रकारीय लेखन का संबंध वास्तविक घटनाओं, जनसमस्याओं और समसामयिक विषयों की सूचना तथा विश्लेषण से है। इसका आधार सत्यापित तथ्य, स्पष्ट भाषा और जनहित है। साहित्यिक तथा सृजनात्मक लेखन में कल्पना, भावानुभूति और कलात्मक अभिव्यक्ति की अधिक स्वतंत्रता होती है। पत्रकार रोचक प्रस्तुति दे सकता है, किंतु तथ्य गढ़ नहीं सकता। उसे प्रामाणिकता, समयबद्धता और सार्वजनिक उत्तरदायित्व का पालन करना होता है।

चरण 4: निष्कर्ष पत्रकारिता में जनहित से जुड़े वास्तविक तथ्यों की प्रामाणिक प्रस्तुति अनिवार्य है; साहित्य में कल्पना और कलात्मक अभिव्यक्ति को अधिक स्वतंत्रता मिलती है।

त्वरित सुझाव: अंतर बताते समय पत्रकारिता को अरचनात्मक न कहें; उसकी तथ्यगत जिम्मेदारी को कल्पना की स्वतंत्रता से अलग करें।

9(ग). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर लिखिए :

मीडिया की भाषा में 'बीट' किसे कहते हैं ? बीट रिपोर्टर बनने के लिए एक पत्रकार में क्या योग्यता होनी चाहिए ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बीट रिपोर्टिंग में पत्रकारिता का कार्य विषय या क्षेत्र के आधार पर बाँटा जाता है।
- विषय का ज्ञान, विश्वसनीय स्रोत और तथ्यों की जाँच पत्रकार की विश्वसनीयता का आधार हैं।

चरण 1: बीट का अर्थ समझिए समाचार संस्थान राजनीति, अपराध, शिक्षा, स्वास्थ्य अथवा खेल जैसे क्षेत्र अलग-अलग संवाददाताओं को सौंपते हैं। पत्रकार को सौंपा गया ऐसा निश्चित क्षेत्र उसकी बीट कहलाता है। इसलिए बीट का अर्थ केवल किसी स्थान का नाम नहीं, बल्कि समाचार जुटाने का निर्धारित कार्यक्षेत्र भी है।

चरण 2: आवश्यक योग्यताएँ पहचानिए बीट रिपोर्टर को अपने क्षेत्र की पृष्ठभूमि, संस्थाओं, नियमों और नई घटनाओं की जानकारी होनी चाहिए। उसे संबंधित व्यक्तियों से संपर्क बनाना, विश्वसनीय स्रोत विकसित करना और प्राप्त सूचना का सत्यापन करना आना चाहिए। सजगता, जिज्ञासा, निष्पक्षता तथा स्पष्ट भाषा में समाचार लिखने की क्षमता भी आवश्यक हैं।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर मीडिया की भाषा में बीट पत्रकार को समाचार संकलन के लिए सौंपा गया निश्चित क्षेत्र है, जैसे अपराध, शिक्षा या राजनीति। बीट रिपोर्टर को अपने क्षेत्र की गहरी जानकारी, उसकी पृष्ठभूमि और समसामयिक घटनाओं की समझ होनी चाहिए। विश्वसनीय स्रोतों से संपर्क, तथ्यों की जाँच, सजगता, निष्पक्ष दृष्टि तथा स्पष्ट और प्रभावी भाषा में समाचार प्रस्तुत करने की क्षमता उसके आवश्यक गुण हैं।

चरण 4: निष्कर्ष बीट का अर्थ निर्धारित कार्यक्षेत्र है; सफल बीट रिपोर्टर विषय का जानकार, सजग, निष्पक्ष और तथ्यपरक होता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले बीट की परिभाषा लिखिए, फिर विषय-ज्ञान, स्रोत, सत्यापन और भाषा की योग्यता जोड़िए।

10(क). काव्य-खंड पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए : 'शीतल वाणी में आग लिए फिरना' – यह पंक्ति किस अर्थ को द्योतित करती है ? 'आत्मपरिचय' कविता के संदर्भ में लिखिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- हरिवंश राय बच्चन की कविता में कवि का संवेदनशील व्यक्तित्व और जीवन-दृष्टि व्यक्त होती है।
- शीतल वाणी और आग का विरोधाभास बाहरी मधुरता तथा भीतरी पीड़ा और आवेग को साथ रखता है।

चरण 1: विरोधी प्रतीकों का अर्थ खोलिए शीतल वाणी कवि की मधुर, कोमल और शांत अभिव्यक्ति का प्रतीक है। आग उसके अंतर्मन की पीड़ा, व्यथा और भावनात्मक तीव्रता को व्यक्त करती है। दोनों को साथ रखकर कवि बताता है कि बाहर की शांति से भीतर की दशा का पूरा अनुमान नहीं लगाया जा सकता।

चरण 2: कवि के व्यक्तित्व से जोड़िए कवि जीवन के दुखों को अनुभव करता है, पर अपनी अभिव्यक्ति को कटु नहीं बनाता। वह अपने अंतर की व्यथा को संवेदनशील और मधुर स्वर देता है। यहाँ आग का अर्थ किसी वास्तविक अग्नि या दूसरों को हानि पहुँचाने की इच्छा से नहीं है; यह उसके अनुभवों और भावनाओं की तीव्रता है। इस अभिव्यक्ति में कवि की सहनशीलता भी दिखाई देती है; उसके दुख उसकी भाषा की मानवीय ऊष्मा को नष्ट नहीं करते।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर शीतल वाणी में आग लिए फिरने का आशय है कि कवि की वाणी मधुर, शांत और कोमल है, किंतु उसके हृदय में दुख, व्यथा और तीव्र भावनाओं की आग जलती है। वह अपनी आंतरिक पीड़ा को कटुता के रूप में व्यक्त नहीं करता। आत्मपरिचय में यह विरोधाभास उसके संवेदनशील व्यक्तित्व को उभारता है, जो जीवन के कष्टों को मधुर अभिव्यक्ति देता है।

चरण 4: निष्कर्ष यह पंक्ति कवि की मधुर वाणी में छिपी आंतरिक पीड़ा और भावनात्मक तीव्रता को व्यक्त करती है।

त्वरित सुझाव: शीतल को वाणी की मधुरता और आग को अंतर्मन की व्यथा से जोड़कर विरोधाभास का आशय स्पष्ट कीजिए।

10(ख). काव्य-खंड पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए : कविता और फूलों के खिलने की प्रक्रिया के अंतर को स्पष्ट करते हुए लिखिए कि कवि ने किसे और क्यों श्रेष्ठ सिद्ध किया है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कुँवर नारायण कविता की सृजनात्मक शक्ति को सीमाओं से मुक्त मानते हैं।
- फूल का खिलना भौतिक प्रक्रिया है; कविता का खिलना अर्थ, कल्पना और अनुभूति का विस्तार है।

चरण 1: फूल के खिलने की सीमा समझिए फूल प्रकृति में किसी निश्चित स्थान पर खिलता है। उसका रंग, रूप और सुगंध आकर्षित करते हैं, किंतु उसका जीवन सीमित होता है। कुछ समय बाद वह मुरझा जाता है। उसका खिलना मुख्यतः बाहरी और भौतिक सौंदर्य की घटना है।

चरण 2: कविता के खिलने की व्यापकता बताइए कविता शब्दों के माध्यम से पाठक के मन में खिलती है। अलग-अलग समय और स्थान के पाठक उसमें नए अर्थ और अनुभव पाते हैं। इस प्रकार उसका सौंदर्य फूल के जीवनकाल की तरह सीमित नहीं रहता। कवि फूल को तुच्छ नहीं कहता; तुलना द्वारा वह कविता की व्यापक और दीर्घजीवी सृजनात्मक क्षमता को सामने लाता है। कविता का यह विस्तार केवल बाहर नहीं होता, वह पाठक की चेतना में भी नए अनुभव और संवेदनाएँ जगाता है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर फूल का खिलना निश्चित स्थान और सीमित जीवनकाल से बँधा है; वह खिलकर मुरझा जाता है। कविता शब्दों, भावों और कल्पना के माध्यम से मन में खिलती है। उसका सौंदर्य समय और स्थान की सीमाएँ पार करके नए पाठकों में नए अर्थ जगाता रहता है। इसलिए कवि ने कविता को श्रेष्ठ बताया है; उसका खिलना फूल की तरह मुरझाने से बँधा नहीं है।

चरण 4: निष्कर्ष कविता का सौंदर्य और प्रभाव समय तथा स्थान की सीमाओं से परे फैलता है, इसलिए कवि उसे फूल से अधिक व्यापक मानता है।

त्वरित सुझाव: तुलना में फूल का सीमित जीवन और कविता का नए पाठकों में निरंतर अर्थ-विस्तार दोनों अवश्य लिखिए।

10(ग). काव्य-खंड पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए : 'बात सीधी थी पर' कविता के संदर्भ में लिखिए कि आप अपनी बात दूसरों तक पहुँचाने के लिए सहज, सरल भाषा का प्रयोग करेंगे या क्लिष्ट अलंकृत भाषा का। तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाषा का मुख्य उद्देश्य विचार को स्पष्ट और प्रभावी ढंग से संप्रेषित करना है।
- कविता अनावश्यक शब्दाडंबर से कथ्य को उलझाने के स्थान पर सहज अभिव्यक्ति का समर्थन करती है।

चरण 1: कविता की स्थिति समझिए कविता में सीधी बात को भाषा की पेचीदगी में फँसा दिया जाता है। प्रभाव पैदा करने के प्रयत्न में शब्दों को अनावश्यक रूप से बदलने और सजाने से बात का स्वाभाविक अर्थ कमजोर पड़ता है। इससे स्पष्ट होता है कि कथ्य के अनुकूल भाषा चुनना आवश्यक है।

चरण 2: अपनी भाषा का चुनाव तर्क सहित कीजिए मैं सहज और सरल भाषा चुनूँगा, क्योंकि श्रोता या पाठक उससे विचार आसानी से समझ सकते हैं। कठिन शब्द और अलंकार तभी उपयोगी हैं जब वे अर्थ को स्पष्ट या प्रभावी बनाएँ। केवल विद्वत्ता दिखाने के लिए उनका प्रयोग संप्रेषण में बाधा डालता है। सरलता का अर्थ भावहीनता नहीं; स्वाभाविक शब्दों में भी गहरी बात कही जा सकती है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर मैं अपनी बात दूसरों तक पहुँचाने के लिए सहज, सरल और प्रसंगानुकूल भाषा का प्रयोग करूँगा। बात सीधी थी पर कविता बताती है कि अनावश्यक भाषाई पेचीदगी सीधी बात को भी उलझा देती है और उसका प्रभाव घटाती है। सरल भाषा विचार को स्पष्ट रखती है तथा श्रोता से सहज संबंध बनाती है। अलंकार तभी उपयोगी हैं जब वे अर्थ में सहायता करें।

चरण 4: निष्कर्ष सहज, सरल और अर्थ के अनुकूल भाषा प्रभावी संप्रेषण करती है; अनावश्यक क्लिष्टता बात को उलझाती है।

त्वरित सुझाव: अपना चुनाव स्पष्ट लिखकर उसे कविता में सीधी बात के भाषा में उलझने की स्थिति से प्रमाणित कीजिए।

11(क). काव्य-खंड पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए :

'बस करो/नहीं हुआ/रहने दो' – इस प्रकार के शब्द मीडियाकर्मी द्वारा क्यों कहे गए ? 'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता के संदर्भ में कारण सहित लिखिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में करुणा के प्रदर्शन के पीछे छिपी मीडिया की संवेदनहीनता और व्यावसायिक दृष्टि पर व्यंग्य है।
- साक्षात्कारकर्ता की सफलता का मानदंड अपाहिज की सहायता करना नहीं, उसके दुःख को दर्शकों के सामने प्रभावपूर्ण बनाना है।

चरण 1: कार्यक्रम के उद्देश्य को समझना मीडियाकर्मी अपाहिज से बार-बार कठोर प्रश्न करता है ताकि वह अपने दुःख से अभिभूत होकर रो पड़े। कैमरा उसकी पीड़ा को उभारना चाहता है। प्रश्नों में सहानुभूति का दिखावा है, पर उनका लक्ष्य दर्शकों को भावुक करना और कार्यक्रम को रोचक बनाना है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर मीडियाकर्मी अपाहिज को रुलाकर उसकी पीड़ा का मार्मिक दृश्य दिखाना चाहता था। बार-बार उकसाने पर भी वह अपेक्षित ढंग से रो नहीं पाया। निर्धारित समय में मनचाहा दृश्य न मिल पाने की झुँझलाहट और कार्यक्रम रोकने के लिए उसने ये शब्द कहे।

चरण 3: निष्कर्ष ये शब्द मनचाहा भावुक दृश्य न बन पाने पर मीडियाकर्मी की हताशा और उसकी बनावटी संवेदना को प्रकट करते हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में अपाहिज को रुलाने का उद्देश्य और उसमें असफल होने पर कार्यक्रम रोकने का कारण जोड़ें।

11(ख). काव्य-खंड पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए :

'क्रांति की गर्जना का शोषक वर्ग पर क्या प्रभाव पड़ता है ? वह अपना मुँह क्यों ढाँप लेते हैं ?' – 'बादल राग' कविता के संदर्भ में लिखिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बादल की गर्जना क्रांति और सामाजिक परिवर्तन का प्रतीक है।
- शोषक वर्ग की समृद्धि पीड़ित जनता के श्रम और शोषण पर टिकी है; क्रांति उसके विशेषाधिकारों को चुनौती देती है।

चरण 1: प्रतीक और वर्ग की पहचान कविता में धनवान शोषक सुख-सुविधाओं के बीच रहते हुए भी क्रांति के स्वर से भयभीत हैं। बादल का गर्जन वंचितों के जागरण का संकेत है। जिस परिवर्तन से किसानों में आशा जागती है, उसी से शोषकों को अपना प्रभुत्व छिन जाने की आशंका होती है। कवि ने इस विपरीत प्रतिक्रिया से समाज के शोषित और शोषक वर्गों के हितों का अंतर भी उजागर किया है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर क्रांति की गर्जना सुनकर शोषक वर्ग भय और आतंक से काँप उठता है। उसे अपनी संचित संपत्ति, सत्ता तथा सुख-सुविधाएँ छिन जाने का डर होता है। इस विनाशकारी परिवर्तन का सामना न कर पाने के कारण वह मुँह ढाँप लेता है।

चरण 3: निष्कर्ष मुँह ढाँपना क्रांति के सामने शोषक वर्ग के भय, असुरक्षा और सामना करने की असमर्थता को व्यक्त करता है।

त्वरित सुझाव: बादल को क्रांति का प्रतीक मानकर शोषकों की संपत्ति और सत्ता खोने की आशंका स्पष्ट करें।

11(ग). काव्य-खंड पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए :
'रुबाइयाँ' शीर्षक कविता से ली गई – "हाथों पे झुलाती है उसे गोद-भरी" – पंक्ति के संदर्भ में 'गोद-भरी' प्रयोग का भाव स्पष्ट कीजिए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फिराक की रुबाइयों में घरेलू जीवन, मातृत्व और शिशु के प्रति सहज स्नेह का चित्रण है।
- गोद-भरी का प्रयोग बच्चे को गोद में लिए माँ और मातृत्व से प्राप्त पूर्णता का भाव व्यक्त करता है।

चरण 1: दृश्य का अर्थ समझना रुबाई में माँ अपने बच्चे को हाथों पर झुलाती है। बच्चे के हँसने और माँ के स्नेहपूर्ण व्यवहार से घरेलू जीवन की आनंदमयी छवि बनती है। गोद-भरी केवल शारीरिक स्थिति नहीं बताता; वह माँ के जीवन में संतान के कारण आए वात्सल्य और उल्लास को भी व्यक्त करता है। यहाँ संतान माँ के जीवन को भावनात्मक समृद्धि प्रदान करती है और उसके स्नेह का केंद्र बनती है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर गोद-भरी का अर्थ है गोद में शिशु को लिए हुई माँ। यह प्रयोग संतान के कारण माँ के जीवन में आई पूर्णता, सौभाग्य और आनंद को व्यक्त करता है। बच्चे को हाथों पर झुलाती माँ का वात्सल्य तथा मातृत्व का सुख इसमें झलकता है।

चरण 3: निष्कर्ष गोद-भरी में शिशु की उपस्थिति के साथ माँ के स्नेह, तृप्ति और मातृत्व के आनंद का भाव निहित है।

त्वरित सुझाव: शाब्दिक अर्थ बताने के बाद मातृत्व की पूर्णता और वात्सल्य का भाव अवश्य स्पष्ट करें।

12(क). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए :
'बाजार दर्शन' पाठ के आधार पर लिखिए कि पर्चेजिंग पावर से क्या अभिप्राय है ? यह किस रूप में दिखाई देता है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पर्चेजिंग पावर का शाब्दिक अर्थ क्रय-शक्ति है, अर्थात धन के आधार पर वस्तुएँ खरीद सकने की क्षमता।
- पाठ में आवश्यकता पर संयम रखने और केवल धन के बल पर अनावश्यक खरीदारी करने के बीच का भेद महत्त्वपूर्ण है।

चरण 1: क्रय-शक्ति का अर्थ व्यक्ति के पास उपलब्ध धन उसे बाजार से सामान खरीदने की क्षमता देता है। इसी क्षमता को पर्चेजिंग पावर कहा गया है। केवल धन होना और उसका विवेकपूर्ण उपयोग करना एक बात नहीं है। लेखक वस्तु खरीदने से पहले अपनी वास्तविक आवश्यकता स्पष्ट रखने का आग्रह करता है।

चरण 2: पाठ में उसका प्रकट रूप जब मन की आवश्यकता स्पष्ट नहीं होती और जेब में पर्याप्त धन होता है, तब बाजार का आकर्षण व्यक्ति को अनावश्यक वस्तुएँ खरीदने की ओर खींचता है। वह वस्तु की उपयोगिता से अधिक अपनी आर्थिक क्षमता दिखाने लगता है। इस प्रकार क्रय-शक्ति खरीदने के गर्व और प्रदर्शन का रूप ले लेती है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर पर्चेजिंग पावर से अभिप्राय व्यक्ति की क्रय-शक्ति, अर्थात धन के बल पर वस्तुएँ खरीद सकने की क्षमता है। बाजार में यह आवश्यक-अनावश्यक सामान खरीदने तथा धन के प्रभाव को प्रदर्शित करने की प्रवृत्ति के रूप में दिखाई देती है। अपनी आवश्यकता स्पष्ट न होने पर व्यक्ति खरीदारी में विवेक खो देता है और क्रय-शक्ति का गर्व उसे फिजूलखर्ची की ओर ले जाता है।

चरण 4: निष्कर्ष पाठ में पर्चेजिंग पावर धन से मिलने वाली खरीदने की क्षमता है, जिसका अविवेकपूर्ण प्रदर्शन व्यक्ति को बाजार के आकर्षण और अनावश्यक खरीदारी में फँसाता है।

त्वरित सुझाव: क्रय-शक्ति की परिभाषा के साथ उसका खरीदारी के गर्व और अनावश्यक व्यय के रूप में प्रकट होना जोड़ें।

12(ख). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए :

'काले मेघा पानी दे' – पाठ में आया कथन "पहले खुद दो तब देवता तुम्हें चौगुना-आठगुना करके लौटाएँगे" – भारतीय संस्कृति की किस विशेषता का परिचायक है, और मानव समाज के लिए क्यों हितकर है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न भारतीय संस्कृति की दानशीलता, त्याग और परोपकार की भावना को पाठ के प्रसंग से जोड़ने की क्षमता जाँचता है।
- इंदर सेना पर पानी डालने का प्रसंग बताता है कि प्राप्ति की कामना के साथ अपना अंश दूसरों के हित में अर्पित करना भी आवश्यक है।

चरण 1: कथन का प्रसंग समझें जीजी इंदर सेना पर पानी डाले जाने को व्यर्थ नहीं मानतीं। उनका विश्वास है कि कुछ पाने के लिए पहले देना चाहिए। जैसे किसान बीज को बचाकर रखने के स्थान पर खेत में बोता है, वैसे ही मनुष्य को अपने पास की वस्तु का एक अंश लोकहित में देना चाहिए। यहाँ पहले देने पर बल है।

चरण 2: सांस्कृतिक भाव और सामाजिक लाभ जोड़ें कथन दान, त्याग और परोपकार की भारतीय परंपरा का परिचायक है। इसका सामाजिक आशय स्वार्थ घटाना और सहयोग बढ़ाना है। दूसरों की आवश्यकता में सहायता करने से संसाधनों का साझा उपयोग होता है और समुदाय संकट का सामना कर पाता है। चौगुना-आठगुना लौटने का विश्वास देने की प्रेरणा को प्रबल करता है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर यह कथन भारतीय संस्कृति की दान, त्याग और परोपकार की भावना का परिचायक है। जीजी के अनुसार, कुछ पाने से पहले अपना अंश अर्पित करना चाहिए, जैसे किसान फसल पाने के लिए बीज बोता है। यह भावना स्वार्थ घटाकर सहयोग, उदारता और पारस्परिक विश्वास बढ़ाती है। इससे संकटग्रस्त लोगों की सहायता होती है और समाज का सामूहिक कल्याण संभव होता है।

चरण 4: निष्कर्ष कथन में दान और त्याग की संस्कृति निहित है, जो सहयोग तथा लोककल्याण का आधार बनती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में दान-त्याग की पहचान के साथ उसका सामाजिक लाभ अवश्य जोड़ें; केवल देवता से प्रतिफल पाने की बात न लिखें।

12(ग). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए :

'दुःख हो या सुख, वह हार नहीं मानता। न ऊधो का लेना, न माधो का देना।' 'शिरीष के फूल' पाठ में आई यह पंक्ति किसके लिए कही गई, उसकी विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न शिरीष के माध्यम से व्यक्त जीवन-दृष्टि और उसकी प्रतिकूल परिस्थितियों में अडिग रहने की विशेषता का परीक्षण करता है।
- प्रकृति का वर्णन यहाँ मानवीय गुणों का संकेत देता है; शिरीष की मस्ती, अनासक्ति और जिजीविषा को एक साथ समझना आवश्यक है।

चरण 1: पंक्ति के संकेत को पहचानें पाठ में यह कथन शिरीष के लिए कहा गया है। लेखक उसके स्वभाव को ऐसे अवधूत की तरह प्रस्तुत करता है जो बाहरी परिस्थितियों से विचलित नहीं होता। यहाँ लेने-देने से अलग रहने का भाव दुनियावी उलझनों के प्रति अनासक्ति है; इसका अर्थ निष्क्रियता या जीवन से पलायन नहीं है।

चरण 2: विशेषताओं को पाठ से जोड़ें भीषण गर्मी और लू के बीच भी शिरीष फूलता रहता है। उसके कोमल फूल विपरीत वातावरण में भी उसकी प्रसन्नता के प्रतीक बनते हैं। वह सुख-दुःख से प्रभावित होकर अपनी सहजता नहीं खोता। इसलिए उसकी पहचान फक्कड़ मस्ती, सहनशीलता, निर्लिप्तता और जीवन की कठिनाइयों के सामने हार न मानने की शक्ति से बनती है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर यह पंक्ति शिरीष के लिए कही गई है। वह भीषण गर्मी और लू जैसी विपरीत परिस्थितियों में भी फूलता रहता है। सुख-दुःख से अप्रभावित होकर वह अवधूत की भाँति मस्त और अनासक्त रहता है। उसके कोमल फूल कठिन परिवेश में भी सरसता बनाए रखते हैं। उसकी सहनशीलता, फक्कड़पन और अटूट जिजीविषा मनुष्य को परिस्थितियों से हार न मानने की प्रेरणा

देती है।

चरण 4: निष्कर्ष शिरीष अपनी अनासक्त मस्ती, सहनशीलता और प्रतिकूलता में भी खिलने वाली जिजीविषा के कारण इस कथन का पात्र है।

त्वरित सुझाव: पहले शिरीष का नाम लिखें, फिर गर्मी में खिलने का उदाहरण देकर अनासक्ति और जिजीविषा स्पष्ट करें।

13(क). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए :
'पहलवान की ढोलक' पाठ के आधार पर लिखिए कि गाँव भयार्त्त शिशु की तरह क्यों काँप रहा था ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न गाँव की भयावह स्थिति और महामारी से उत्पन्न सामूहिक असुरक्षा को समझने की क्षमता जाँचता है।
- भयभीत शिशु की उपमा गाँव की विवशता और भय का चित्र प्रस्तुत करती है।

चरण 1: भय के वास्तविक कारण बताएँ गाँव में मलेरिया और हैजे की महामारी फैली हुई थी। रोग, अशक्तता और मौतों के साथ भोजन तथा उपचार की कठिनाइयाँ भी थीं। लगातार मृत्यु की आशंका से लोग असहाय हो गए थे। रात का सन्नाटा और अँधेरा इस आतंक को और गहरा करते थे। शिशु की उपमा लोगों की उस स्थिति को व्यक्त करती है जिसमें वे संकट से स्वयं को बचाने में असमर्थ अनुभव कर रहे थे।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर गाँव में मलेरिया और हैजे की महामारी फैली थी। भूख, अशक्तता और उपचार के अभाव में लोग मर रहे थे। रात का अँधेरा और सन्नाटा मृत्यु का भय बढ़ाते थे। इसी असहायता और आतंक से गाँव भयभीत शिशु की तरह काँप रहा था।

चरण 3: निष्कर्ष महामारी, अभाव और मृत्यु के निरंतर भय ने समूचे गाँव को आतंकित तथा असहाय बना दिया था।

त्वरित सुझाव: भय का कारण केवल अँधेरा न लिखें; महामारी, अभाव और मृत्यु की आशंका को मुख्य आधार बनाएँ।

13(ख). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए :
श्रम विभाजन से क्या अभिप्राय है और इसकी क्या आवश्यकता है ? 'श्रम विभाजन और जाति प्रथा' पाठ के आधार पर लिखिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न श्रम-विभाजन का अर्थ और आधुनिक समाज में उसकी उपयोगिता स्पष्ट करने की क्षमता जाँचता है।
- कार्य-विभाजन तथा जाति के आधार पर श्रमिकों के स्थायी विभाजन में अंतर रखना आवश्यक है।

चरण 1: अर्थ और आवश्यकता समझें समाज के अनेक कार्य अलग-अलग व्यक्तियों को उनकी योग्यता और रुचि के अनुसार सौंपना श्रम-विभाजन है। आधुनिक समाज में काम इतने विविध और जटिल हैं कि एक व्यक्ति सब काम कुशलता से नहीं कर सकता। अलग कार्यों में विशेषज्ञता से उत्पादन और सेवाओं की दक्षता बढ़ती है। यह व्यवस्था जन्म से पेशा बाँधने का समर्थन नहीं करती।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर श्रम-विभाजन का अर्थ समाज के विभिन्न कार्यों को व्यक्तियों की योग्यता और रुचि के अनुसार बाँटना है। आधुनिक समाज के विविध और जटिल कार्यों को कुशलतापूर्वक पूरा करने के लिए इसकी आवश्यकता है। इससे विशेषज्ञता, कार्यक्षमता और उत्पादन में वृद्धि होती है।

चरण 3: निष्कर्ष श्रम-विभाजन विविध कार्यों का उचित बँटवारा है; सामाजिक आवश्यकताओं की कुशल पूर्ति के लिए यह आवश्यक है।

त्वरित सुझाव: अर्थ के बाद कुशलता और विशेषज्ञता का लाभ लिखें; श्रम-विभाजन को जन्म पर आधारित पेशा निर्धारित करना न बताएँ।

13(ग). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए :

'उपनाम रखने की प्रतिभा होती, तो मैं सबसे पहले इसका प्रयोग अपने ऊपर करती' – 'भक्तिन' पाठ में लेखिका ने यह कथन किस संदर्भ में और क्यों कहा ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रसंग का आशय समझना आवश्यक है। भक्तिन अपना वास्तविक नाम लक्ष्मी छिपाना चाहती थी, क्योंकि जीवन में धन और समृद्धि का अभाव उसके नाम के अर्थ से मेल नहीं खाता था।
- लेखिका के कथन में आत्मपरिहास है। वह भक्तिन के नाम को लेकर उपहास करने के बजाय अपनी नामकरण की क्षमता पर विनोद करती हैं।

चरण 1: नाम छिपाने का प्रसंग भक्तिन का असली नाम लक्ष्मी था। नाम धन की देवी का था, किंतु उसके जीवन में गरीबी और संघर्ष थे। इसलिए उसने लेखिका से अपने वास्तविक नाम का उपयोग न करने का अनुरोध किया। इस इच्छा को देखते हुए लेखिका के सामने उसे दूसरे नाम से पुकारने का प्रश्न आया।

चरण 2: कथन का कारण लेखिका स्वयं अपने नाम को विशेष सार्थक या आकर्षक नहीं मानती थीं। इसलिए उन्होंने विनोदपूर्वक कहा कि यदि उनमें अच्छे उपनाम रखने की प्रतिभा होती तो उसका लाभ पहले स्वयं उठातीं। कथन में भक्तिन के प्रति आत्मीयता और अपने प्रति सहज हास्य व्यक्त हुआ है।

चरण 3: निष्कर्ष लक्ष्मी अपने नाम और गरीबी के विरोध के कारण असली नाम छिपाना चाहती थी। उसके नामकरण के प्रसंग में लेखिका ने आत्मपरिहास किया कि अच्छे उपनाम रखने की प्रतिभा होती तो पहले अपना नाम बदलतीं। इससे उनकी विनम्रता और आत्मीयता झलकती है।

त्वरित सुझाव: नाम, जीवन की परिस्थिति और लेखिका के आत्मपरिहास को जोड़कर प्रसंग स्पष्ट करें।

14(क). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

'सिल्वर वैडिंग' कहानी के संदर्भ में सिद्ध कीजिए कि समय के साथ न बदलने से व्यक्ति अकेला क्यों हो जाता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कहानी में यशोधर बाबू की पुरानी मान्यताओं और परिवार की आधुनिक जीवनशैली का अंतर उनके अलगाव का कारण बनता है।
- समय के साथ बदलने का अर्थ विवेक छोड़ना नहीं, बल्कि नई पीढ़ी की आवश्यकताओं को समझना और संवाद बनाए रखना है।

चरण 1: कहानी का साक्ष्य यशोधर बाबू सादगी तथा पुराने सामाजिक व्यवहार को महत्त्व देते हैं। पत्नी और बच्चे नई सुविधाएँ तथा आधुनिक ढंग अपनाते हैं। विवाह की पच्चीसवीं वर्षगाँठ का उत्सव भी उन्हें सहज नहीं लगता। जिस आयोजन को परिवार खुशी मानता है, उसमें वे अपने को असंगत अनुभव करते हैं।

चरण 2: अकेलेपन का कारण वे नई पीढ़ी की आकांक्षाओं से तालमेल नहीं बैठा पाते और बार-बार पुराने आदर्शों की कसौटी पर वर्तमान को परखते हैं। इससे घर में रहते हुए भी भावनात्मक दूरी बढ़ती है। कहानी बताती है कि कठोर आग्रह के स्थान पर समझ और संवाद हों तो बदलते संबंधों में अपनापन बच सकता है।

चरण 3: निष्कर्ष यशोधर बाबू पुरानी मान्यताओं से बँधे हैं, जबकि पत्नी-बच्चे आधुनिक जीवन अपनाते हैं। सिल्वर वैडिंग का उत्सव भी उन्हें पराया लगता है। बदलती रुचियों को न समझ पाने से संवाद घटता है और वे परिवार के बीच रहकर भी अकेले पड़ जाते हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में यशोधर बाबू और परिवार की भिन्न रुचियों का उदाहरण देकर अकेलेपन का कारण बताइए।

14(ख). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

'जूझ' कहानी के आधार पर लिखिए कि लेखक की आनन्दा से आनंद यादव बनने की यात्रा में मास्टर सौंदलगेकर की क्या भूमिका थी ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मास्टर सौंदलगेकर की भूमिका को कविता के प्रति रुचि जगाने, अभ्यास कराने और आत्मविश्वास बढ़ाने के आधार पर समझना चाहिए।
- लेखक की साहित्यिक पहचान के पीछे उसकी मेहनत के साथ ऐसे शिक्षक की प्रेरणा भी थी जिसने उसकी प्रतिभा पहचानी।

चरण 1: कविता से परिचय सौंदलगेकर मास्टर कविता को केवल पाठ्यविषय की तरह नहीं पढ़ाते थे। उनका भावपूर्ण, लययुक्त काव्यपाठ लेखक को आकर्षित करता था। वे कवियों और अपनी रचनाओं की चर्चा करते थे। इससे लेखक को अनुभव हुआ कि कविता अपने आसपास के जीवन और अनुभवों से भी रची जा सकती है।

चरण 2: रचना और प्रोत्साहन लेखक कविता बनाने और उसे गुनगुनाने का अभ्यास करने लगा। मास्टर उसकी रचनाएँ सुनते, सुधार सुझाते तथा उत्साह बढ़ाते थे। इस सहयोग ने उसकी झिझक घटाई और अभिव्यक्ति का भरोसा दिया। खेतों में श्रम करने वाले बालक की सृजनशीलता निखरी और साहित्यकार बनने की दिशा मिली।

चरण 3: निष्कर्ष सौंदलगेकर मास्टर के भावपूर्ण काव्यपाठ ने आनन्दा में कविता की रुचि जगाई। उन्होंने उसकी रचनाएँ सुनकर सुधार सुझाए और प्रोत्साहित किया। इससे लेखक का आत्मविश्वास तथा सृजनशीलता विकसित हुए और श्रमशील बालक आनन्दा को साहित्यकार आनंद यादव बनने की दिशा मिली।

त्वरित सुझाव: शिक्षक की भूमिका को रुचि, रचना-अभ्यास और प्रोत्साहन के क्रम में उदाहरण सहित लिखें।

14(ग). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

आज जल संकट एक बड़ी समस्या है, क्या ऐसे में सिंधु सभ्यता के महानगर मुअनजो-दड़ो से जल-व्यवस्था की प्रेरणा ली जा सकती है ? उचित उत्तर दीजिए ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मुअनजो-दड़ो का नगर-नियोजन पानी की उपलब्धता, स्वच्छता और निकासी के प्रति विकसित समझ का प्रमाण है।
- आज के जल संकट से जोड़ते समय पुरानी व्यवस्था से प्रेरणा लेने और उसे वर्तमान आवश्यकताओं के अनुसार अपनाने का विचार स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: प्राचीन व्यवस्था की विशेषताएँ मुअनजो-दड़ो में कुएँ, स्नान की सुविधाएँ और व्यवस्थित जलनिकासी थीं। घरों से निकलने वाला पानी नालियों से बाहर जाता था। महान स्नानागार की बनावट भी जल और स्वच्छता के प्रति सजगता दिखाती है। इससे पता चलता है कि पानी नगर-जीवन की योजना का आवश्यक अंग था।

चरण 2: आज के लिए प्रेरणा आज भी बस्तियों में पानी के स्रोतों की सुरक्षा, स्वच्छ आपूर्ति और निकासी की सुव्यवस्थित योजना जरूरी है। उपलब्ध जल का जिम्मेदार उपयोग तथा सार्वजनिक व्यवस्था की देखभाल जल संकट कम करने में सहायक हो सकते हैं। प्राचीन नगर की योजनाबद्धता को आधुनिक तकनीक के साथ अपनाना उपयोगी होगा।

चरण 3: निष्कर्ष हाँ, मुअनजो-दड़ो के कुएँ, स्नानागार और सुनियोजित नालियाँ जल के प्रति सजगता दर्शाते हैं। आज जलस्रोतों की सुरक्षा, स्वच्छ आपूर्ति, उचित निकासी और जिम्मेदार उपयोग को नगर-योजना का हिस्सा बनाकर उसकी व्यवस्था से प्रेरणा ली जा सकती है।

त्वरित सुझाव: कुओं और नालियों जैसे पाठगत उदाहरणों को आज की जल-संबंधी आवश्यकताओं से जोड़ें।